



उत्तरमठगवतः ॥

पैषभृमीठगवतीताभास्त  
भरुभृमीठगवतीवेदस्तुभ

विः ॥ यत्रभृमीठगवती ॥

सुःपरभाद्देवता ॥ यमेष्ट

रचमेष्टभृमीठगवतीवेदस्तुभ

मेष्टविष्टीलभा ॥ सचष्ट

विष्टीलभाभेकंमराभं

विष्टीलभा ॥ यदंष्टभचष्ट

मेष्टविष्टीलभाभुष्ट

उत्तर  
मीठ  
गवती  
५०



वेरंमिद्विभुमभुलि  
वेरद्विधावक  
वेरंमिद्विभुमभुलि  
यदिभामु  
पुष्टेयमद्वेयमलेष्टेय  
मवमेदिभामु  
मवगःभुगःमलेयंभग  
उष्टेयमिकुष्टेयमः  
मपज्जुपालिमउमेयमदम  
मउतिकरिष्टिकुष्टेयमः

ग्रीड  
५०  
३



पुनः पुनः पुनः  
जे मीनपुत्री देवावाण  
चविरियेगः ॥ ३३ ॥  
पुनः ॥ ३४ ॥ पुनः पुनः पुनः  
ठगवडः नगयल्लेन सुयेंद्रमे  
नगुविडं पुगल्लभरिभम  
दठगडः ॥ ३५ ॥ पुनः पुनः पुनः  
गवडीभमृद साष्टायिरीभम  
इभः ॥ ३६ ॥ पुनः पुनः पुनः  
ठवड्डियिल्लीभ ॥ ३७ ॥ पुनः पुनः पुनः

भविमालवइहृत्तारिहृत्त  
 उपइहृत्त॥ येनइहृत्तारिहृत्त  
 लः पूहृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 ३॥ पूहृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 धामये॥ हृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 गीहृत्तारिहृत्तारिहृत्त॥ ३॥ भवे  
 रिहृत्तारिहृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 धामये॥ हृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 ३॥ भवे  
 रिहृत्तारिहृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 धामये॥ हृत्तारिहृत्तारिहृत्त  
 ३॥ भवे

गीहृत्त  
 ५  
 ३



परभा, रं, रु, व, दे, ए, ग, झ, म, (   
 भ, ॥ ५ ॥ सी, ध, दे, ए, उ, ए, य,   
 इ, ष, ए, ला, गा, बु, र, नी, ले, द, ला,   
 म, लृ, या, द, व, जी, रु, प, ए, व, दि, नी,   
 क, ल, र, वे, ला, ऊ, ल, ॥ ५ ॥ सु, इ, म,   
 वि, क, ल, यो, म, क, ग, म, दे, र, व,   
 डि, नी, मे, डी, ला, ए, ल, धा, ५, वे,   
 ऊ, म, र, मी, के, व, इ, के, के, म, वे, ॥ ५ ॥   
 पा, ग, य, द, व, म, भ, र, ए, म, भ, लं,   
 गी, इ, ऊ, ग, वे, इ, टं, ग, म, ए, न, क

केसंकरिकषा, अष्टौ न वेति  
 भा॥ लेके मल्लरथ द्वाये रजः  
 दः पपीयुभारं भुम्भुयाद्  
 उपं के एं कलिमल प्रसंभितः  
 प्रथम॥ १॥ अकं करेति वाम  
 लं पङ्क्तु लङ्ग यउ गिरिभा॥ यर  
 पाउमद्वं वरे धारभा, ननु भा  
 वभा॥ ३॥ यं वृक्ष वरुणं दूर  
 द्भूमि उभुव त्रिदिशैः पुत्रैश्च  
 दैः भा, इषाद र्भुमि परिधमै

गीतः  
 ५  
 ५



यतिपंभाभगाः॥ पृष्टवभुः  
 उरुउरभरमाधपृष्टियंयेनि  
 रेयभुः उरविदः भगभगग  
 लदेवायउमैरभः॥ ७ ॥ यः ३  
 गभुः उवा म॥ १०० दे दे उ म  
 दे दे भवेत ययुः चः भभ  
 कः पाः पृवाष्टैव किभः उच ३  
 भाद्रयः ॥ १० ॥ भं ए य उवा म॥  
 पृष्ट उपाः पृवाः रीकं वृमं द  
 दे ० रभः पुमादभपसंगभु

गहवमममव्वीर ॥ ३ ॥ पसैरुं ।  
 पाहुपइलिभागादमदडीम  
 अभा ॥ वृमंरूपमपइल ॥ ३ ॥  
 मिष्टेलणीमड ॥ ३ ॥ पुरसुगम  
 देष्टामाडीभाल्लरमभायणि ॥  
 ययणरेविगटसुसूपमसुभद  
 गवः ॥ २ ॥ पधुकेडसैकिडरः क  
 मिगएसुवीदवार ॥ पमणि ।  
 बुविठेणसुमेदसुगरपुडवः ।  
 प यणमवृसुविरुउउडमैस

भट्टकिः

गीड.  
 ५.  
 ५



सुवीदवार॥ मोठदुईपदेया  
 सुभचसवमदराः॥ १॥ पभ  
 कंडविमिधुयेडात्रिवेण्डिले  
 उभ॥ रायकभममैरुभुंलुजं  
 डावुवीधिउ॥ १॥ ठवाठुधुसु  
 कलसुपुसुभभिडिलुयः  
 पसुडाभाविक्कलसुभोभमं  
 डिल्लयदुषः॥ ३॥ पट्टमवदवः  
 सुगभदुडेडुणीविडाः॥ राग  
 मभुपदराः॥ भवेयडुविमरा

३०

कुसुमवः

अवुवः

मः॥७॥ पपदापुंउमभकंर  
 लंसीधुठिगदिउभा॥पदापुं  
 द्विमेउधोउलंठीभाठिगदि  
 उभा॥०॥ पयरेपुमभचेपु  
 यषाठगभवसिउः॥ठीधमे  
 वाठिगदुठवतुःमचप्रवदि  
 ००॥भद्रयउवाम॥उभुभाद्र  
 यरुचंउमवदुःपिउभदः॥  
 सिंदरामंविरेष्टेसंरुपे  
 पूडापवार॥०१॥उउःमल्लसुठ  
 दसुपामवारकगेभापः॥मज

गीड.  
 धू.  
 ५



भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥  
 भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥ भैरवः ॥ ३३ ॥

ॐ नमो भगवते

कश्चिपुत्रमेषुमःमिपदीम  
 भद्रः॥ यमुदुविगदसु  
 भाटकिष्ठापगणितः॥०१॥  
 पदेद्वेपदेयसुभवमःपवि  
 वीपडे॥ भोटदुसुभद्रःम  
 सुदयःपषक्तवका॥०३॥  
 मयेयेणुगधूलंरुदयवि  
 वृदययज॥ नरुसुपविवीमे  
 वउभसेद्वरादय॥०७॥  
 सवृवमिडमधुणुगधुक्

०  
 देयउ  
 नद

गीत  
 ५  
 १



पिबुणः प्रवृत्तमसुभं पठे  
 ननु दृष्ट्वा सुवः ॥ ३० ॥ हृषीके  
 मंडलं वा हृषीकभादभं दीपते  
 मेरयेन रुयेदृष्टं वं भूपयमः  
 सुत ॥ ३० ॥ यावत्तु विगीतं  
 येन कंभात्तु वसिष्ठं ॥ केन या  
 मद्येन हृष्टं भूमिं नमः भूमि  
 ३३ ॥ येन भागवत्तु वेदं यत्तु  
 मभागतः ॥ एतत्तु भूमिं नमः  
 दृष्टं प्रियमि कीदृशः ॥ ३३ ॥

दे०

गीता.  
पू.  
३



गुधि, इ, मभी, दु, मके, उयः, म  
चा, व, वु, र, व, भि, उ, र, ॥ रूप, य, प  
गया, वि, धु, वि, धी, म, वि, म, भ, व, वी  
उ, ॥ ३१ ॥ **म, ल, र, व, य, ॥** म, धु, मं  
मु, ए, रं, द, धु, य, य, मं, म, भ, प, भि, उ  
म, ॥ **मी, म, वि, म, म, ग, इ, लि, म, ए,**  
म, प, रि, मु, धु, डि, ॥ ३१ ॥ **वे, प, ष, म**  
गी, रे, मे, रे, म, द, द, म, ए, य, उ, ॥ ग, श्री  
वं, मं, म, उ, द, म, इ, कै, व, प, रि, म, ह  
उ, ॥ ३३ ॥ **र, म, म, कै, भु, व, भु, उं, इ, म**

श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ निमित्तं निमित्तं  
 भिविपरीतं निमित्तं ॥ ३० ॥ वसु  
 धैव कुटुम्बकम् ॥ निमित्तं निमित्तं  
 व ॥ ३० ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥  
 मगलं भाग्यनिमित्तं ॥ किं नैव गलं  
 गेविदं किं नैव गलीविदं ॥  
 ३१ ॥ यथा भक्तं कर्तुं नैव गलं  
 गाः भाग्यनिमित्तं ॥ ३२ ॥ वसुधैव  
 कुटुम्बकम् ॥ ३३ ॥ यथा भक्तं कर्तुं  
 पुण्यं यथा भक्तं कर्तुं ॥

गी. ॥  
 पु. ॥  
 ७



पिठमर्दः॥ भादुलाः सुसुरः॥  
धेइः भूलाः मभुविनमुवा॥  
३८॥ मठत्रदनुमिमुभिप्रुडेपि  
मयभुदर॥ १॥ पिडेलेहगणा  
भुडेडेः किं नमदीरुडे॥ ३५॥  
विदहणपुगभुवः कभीतिः भू  
ल्लरादर॥ १॥ पापमेवामुयेदसु  
रुडेइराउडायिरः॥ ३६॥ ३८॥  
जहावयेदनुणपुगभुव  
नुवार॥ १॥ सुणरंजिकुषंदइम

गिरः भू भभाणव ॥ ३१ ॥ यदुष्टे  
 यपृष्टि, लेकेपुन उम उमः ॥ ३२ ॥  
 लकयक उं मेपं भिइ मेदे मय  
 उकभा ॥ ३३ ॥ कषं रल्ले यमभु  
 दिः पापा, मभु विवदि उभा ॥ ३४ ॥  
 लकयक उं मेपं प्रपृष्टि, ल  
 म ॥ ३५ ॥ उलकये पुम पृष्टि,  
 उलणमः मना उताः ॥ ३६ ॥ यम  
 उलकय, मभु मेदि ठव इय ॥ ३७ ॥  
 यम मेदि ठव इय, पुम पृष्टि, उ

गीता.  
 ५.  
 ०.



लघ्विषः॥ श्रीपद्मभक्तवत्सल  
सयवल्मभक्तः॥ २०॥ भक्त  
नरकयैवकुलप्रागकुलभूम  
भक्तिपिउरैह्यंलपुपिभूम  
कत्रियाः॥ २१॥ मेधैरैःकुल  
प्रागवल्मभक्तकैः॥ २२॥  
मृतेसतिपदःकुलपदमृमास  
उः॥ २३॥ उक्तकुलपदमृमा  
नष्टाण्णराग्नः॥ नरकत्रियं  
वसेरुवजीहृत्सुसुम॥ २४॥ प

देवउभयदुपंकडुवृवमिडव  
 यभा॥ यदृष्टभापलेठरजडु  
 भुएरभुदुडः॥ ८५॥ यद्विभा  
 भुपुडीकरभमभुसभुपायः  
 एरुभुगलजदुभुद्विप्रियड  
 रंठवेड॥ ८६॥ भाद्वयउवा ॥  
 एवभुदुल्लरःभद्विरेपभुउ  
 पविमड॥ विभद्वभमभुग  
 पंमेकभंविप्रभाभः॥ ८७॥  
 उडिमीठगवलीडभुपविधुदु

०  
म

क.  
 गी.  
 ५.  
 ००



अविदुषां धेगमाभुमी नक्ष  
लारमं वादे पल्लवविधा नैराम  
पुषभेष्टायः ॥ ० ॥ भाद्रपद  
वाम ॥ ॐ उं उं वा रुपया विपुष  
भूपल्लवुलेह ॥ भा ॥ विधी  
मनुभिर्दं वां रुभवा मभपसुम  
नः ॥ ० ॥ श्रीठगवात्रवाम ॥ उं उं  
भुंकमलभिर्दं विधमभमपु  
सुिउभा ॥ परदष्टाभुभुनृ  
भकीरुकरभल्लर ॥ ३ ॥ लैवभा

भगवः पादने उदुपुपपुते ॥  
 कुरु मय मे वलुं ई ईति ध  
 पात्रप ॥ ३ ॥ पलुर उवा म ॥ क  
 धं नी ध म धं म ह्मे म्मं य म प  
 म मर ॥ उधमिः पुरिये म्मिध  
 सदा वरिभुमर ॥ ४ ॥ गुडुन ज  
 इति म न उ म वा ज्ञे ये के कुं के क  
 म पी न ले के ॥ न इ क क म्म भु गु  
 इति के व डाली य के गा नु विर प  
 मि गुरा ॥ ५ ॥ न मे उ वि म्मः क उ

४.  
 गी.  
 दि.  
 ०३



उत्तरेगरीयेयद्वा एवेभयदिव  
नेएवेयः॥ यत्रिवद्वरणि।  
एवीविधाभमुवभिः पुभुए  
एउगभूः॥ १॥ कदृष्टमपे  
दउमुठवः यमुमिहं पदमं  
अममैः॥ यमुयः शुत्रिनि  
उकुदिउमेमिष्टमुदं सतिभं  
हंपुपत्रभा॥ १॥ रदिपुपमु।  
मिभभापउदृष्टमुकभमुप  
ममिद्वियैभा॥ पवपुदु।

भावमपत्रभङ्गं गृह्यमाणं  
 मपिमापिपट्टमा ॥ ३ ॥ म  
 यउवा ॥ मरभुङ्गुहधीके  
 मंगुदकेमः परउप ॥ रयेडु  
 उडिगेविदुभुङ्गुङ्गुवद  
 ७ ॥ उभुवागहधीकेमः पूदम  
 त्रिवरुगउ ॥ मेरयेरुठयेदु  
 विधीमउमिदं वमः ॥ १० ॥ श्री  
 उगवाउवा ॥ ममेष्टुनउमो  
 ममुंपुदुवां सुठधम ॥ गड,

ठ.  
 जी.  
 दि.  
 ०३



अथ गङ्गा अंशु गङ्गा मेघ त्रिपथि  
तः ॥ ०० ॥ ननु वा जं एतु रा भं  
द्वे मे ए राणि पाः ॥ न मे वरु वि  
प्राभः भवे वय भिः परभा ॥  
०१ ॥ मे जि रे मि दृषा मे दे के भा  
नं ये व रं ए रा ॥ उषा मे द नु रा  
त्रि ची र भु र भ दृ ति ॥ ०३ ॥ भा  
इ भ चा सु के त्रे य मी उ ध्रु म  
प दः प दः ॥ सु ग भा पा यि रे  
नि दृ अं सि डि द भु र ग ॥ ०४ ॥

यंदिनवृषयत्रुडेपुरुषंपुरुषद  
 ८॥ भमदःपमुपणींभेभुडा  
 इयकल्लडे॥०५॥ नभुडेविदु  
 उरुवोरुवेविदुउभडः॥३८॥ ये  
 गपिदुमुत्रुभुरयेभुदुमचिदिः  
 ०॥ पविनामिडुडिद्वियेभ  
 चभिदुउभड॥ विनामभुदुय  
 भुभुनकचिदुदुभदडि॥०७॥  
 पत्रवत्रुडेमेदुनिरुभुजःम  
 गीदि॥ पनामिरेपुमेयभुअ

८.  
 गी.  
 दि.  
 ०५





लुकि यव विदय श्वरि ग लु।  
 तिर रोप ग लि ॥ उवा मरी ग लि।  
 विदयणी लु रुट निभं यति,  
 नव रिसे दी ॥ ३३ ॥ त्रै रं मुद्र ति  
 मभ्रु लि त्रै रं द डि पा व कः ॥  
 नमै रं लै रं य रु पे रं मे ध य ति,  
 भा न उः ॥ ३३ ॥ प मुद्रै य म द ह्ये  
 य म लै रं मे ध पा व म ॥ नि हः  
 भ व ग उः भ्रु रं र म ले यं भ ग उ  
 नः ॥ अ ॥ प रुद्रै य म मि त्रै य म

क.  
 गी.  
 द्वि.  
 ०५



विकदेयमष्टे ॥ ३५ ॥ वंविदि  
द्वेनं नमोमिदुमदसि ॥ ३५ ॥  
चषमेनं निदुसुं निदुं वामचम  
भउभा ॥ ३६ ॥ पिदुं भदवाजे  
नेनंमोमिदुमदसि ॥ ३७ ॥ सधु  
दिपूवेभदुचूवंणमभउधु  
म ॥ ३८ ॥ पविददेऊनदुंमो  
मिदुमदसि ॥ ३९ ॥ चदुऊमी  
निदुउनिदुऊमष्टानिऊगउ ॥ ४० ॥  
दुऊनिगनदुवउदुऊपविदवर

百五

五  
五  
五  
五



इमपावः३भा॥ सुपिः कः डि  
 याः पाउलः के ये युः सुमीः सुमभा  
 ३३॥ सुषः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः  
 करिः सुभिः॥ ३३ः सुभिः सुभिः सुभिः  
 डिः सुभिः सुभिः सुभिः॥ ३३ सु  
 कीः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः  
 उवः सुभिः॥ सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः  
 डिः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः  
 याः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः  
 रः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः सुभिः

यशुभिलायवभा॥३५॥यव  
 सुवामं सुवज्जमिष्टुतिउवा।  
 जिउः॥निउउमुवभाभहुंउ  
 मः।पउउंउकिभा॥३६॥जउ  
 वशुमुमिष्टुजंणिइवांउकु।  
 मेभजीभा॥३७॥मुइउकुकेउ  
 ययइयइउनिमुयः॥३८॥यप  
 दः।पिभमेरुमुलाकलाकेण।  
 यणये॥३९॥यइययणमुने  
 नंपापमवापुमि॥४०॥पपउ



किदिउभाह्वुदिदेगेदिभं  
मर॥ ब्रह्मयुक्तेययापाऊ।  
कमवतुंप्रदभृसि॥ ३७॥ नद  
किरुभासैसिप्रववायेरविह  
उ॥ सुल्दभप्रभृणमभृइयोभ  
नउठेयाउ॥ ४०॥ ब्रवभायादि  
कवद्विरेकेऊऊऊनऊ॥ वरु  
माणऊरउसुब्रह्मयेवभा  
यिगभा॥ ४०॥ यमिभंयुधि  
उं वामं प्रवमनुविपसिउः॥ व

मवमरः पाऊरावृमभीति।  
 वमिरः ॥ २१ ॥ कभादुरः सु।  
 नपगणककमलधूमभा।  
 दियविमेषवकलं ठेगैसुद  
 गतिंधुति ॥ २२ ॥ ठेगैसुदपुमा।  
 ऊंउयापहुउमैउभाभा ॥ २३ ॥  
 वभायादिकवदुःभभाणे  
 रविणीयउ ॥ २४ ॥ उैगुष्टवि।  
 धयावेमनिमुगुष्टेठवाल्ल  
 ॥ निमुकुनिहभइमुनिदेग

रु.  
 गी.  
 दि.  
 ०३



केमप्रमवार ॥ ८५ ॥ याचारक  
उमपारभवः मंलुडेक ॥ ८  
वाचवेधवेमेषुवृत्तलभुवि  
एवः ॥ ८६ ॥ कद्वृवाधिक  
रभुभादलेषकममर ॥ भाक  
मदलदेउकुमडेभकेभुकम  
वि ॥ ८७ ॥ योगभुजमकदलि  
मङ्गटकुणरल्लय ॥ भिद्वृमि  
केभमेद्वृभमङ्गयेगउमृउ  
८८ ॥ दुरल्लवकमवदिये

गङ्गासूय ॥ वसुमन्त्र ॥ भवि  
 सुदुपायः दलद्वयः ॥ ७ ॥  
 वदियुक्तेण दडीन उमेधुत  
 दुधुते ॥ अष्टदिगाययुष्टयुयो  
 गः कम्भुके मलभा ॥ ५ ॥ क  
 मणवदियुक्तदिदलं दकुम्भ  
 सीधिमः ॥ एद्वयविरिमुक्तः  
 पदंगवुत्तुगभयभा ॥ ५ ॥ य  
 मतेमैदकलिलं वदियुक्तुति  
 रिष्टुति ॥ उदगवुभितिवेदं मे

६.  
 गी.  
 दि.  
 ७



उहृमुमुमुमु॥५३॥मुतिविप्र  
डिपत्राउमममुमुतिप्रल  
मभाणवमलावडिमुमदेग  
मवाभुमि॥५३॥पल्लउवाम  
मुिउपल्लमुकंठधामभाणि  
भुमुकेमव॥मुिउपीःकिंप्रठ  
यउकिभामेउवलेउकिभ॥  
पर॥श्रीठगववुवाम॥पुण  
दडियमकभाकुवाचउभने  
गउव॥पुमुदेवाभनउडः॥

भिउपुल्लभुमेवुउ ॥ ५५ ॥ दुःपा  
 भुउदिप्रभराः भुपिभुविगउभु  
 दः ॥ वीउगगनयरेणः भिउपी  
 दुनिरुवुउ ॥ ५६ ॥ यः भवइरठि  
 भुदभुउदुपुभुभुभुभा ॥ न  
 भिनरुतिउदिभिउभुपुल्लभुति  
 भिउ ॥ ५७ ॥ यमभंरउसायं  
 ऊमेइसीवभवमः ॥ ५८ ॥ दिपा  
 मीदिपाऊहभुभुपुल्लभुतिभि  
 उ ॥ ५९ ॥ विषया विनिवउतेनि

क.  
 गी.  
 दि.  
 ३.



गदगभुमेदिरः॥ रभवलेरभे  
पृभृपरंरुभृरिवइउ॥ ५७॥  
यउउरुपिकेउयपरुधभृवि  
यमिउः॥ उद्वियालिप्रभाषी  
विदरतिप्रभंठभरः॥ ५८॥ उ  
विभवालिमंयभृयुजप्रभीः  
उमरः॥ वमद्वियभृद्विया  
लिउभृप्रभृप्रतिमिउः॥ ५९॥ उ  
यउविधयाचंभाःमंगभृप्रुध  
एयउ॥ भन्नं एयउकभाक

भाङ्गोपेक्षितयउ ॥ १३ ॥ कौण्डिन  
 डिभंभेदः संभेदभृदिविदुभा  
 भृदितुं साद्विदिरामेवदिरामा  
 द्भृत्तुति ॥ १४ ॥ रागद्वयविय  
 कैमुविषयनिद्रियैश्चभ ॥  
 शुद्धवष्टैविष्टेयद्भृत्तुभाभृत्तु  
 गभृत्ति ॥ १५ ॥ प्रभाभृत्तुभृत्तुः  
 गंजनिभृत्तुयस्यउ ॥ प्रभृत्तुभृत्तु  
 भृत्तुभृत्तुः पदवतिभृत्तु ॥ १६  
 नाभृत्तुभृत्तुयुक्तुभृत्तुयुक्तुभृत्तु

क.  
 गी.  
 दि.

३०



ठवरा॥ रमा ठव यजः सात्रि  
मात्रुभृकुतः सापभा॥ १०॥  
उद्दिपा लंदिमरं यमनेत्र  
विणीयते॥ उमभृदरतिप्रह्वं  
यत्रावभिवाभुमि॥ ११॥ उम  
हृभृमदरं निगदीडनि  
भवमः॥ उद्दिपा लीद्दिपा  
हृभृभृप्रह्वप्रतिष्ठित॥ १२॥ या  
निमा भवकुडरां उभृं सगतिः  
भंयभी॥ यभृं सगतिकुडराभि

निमपसृजिभरेः॥१७॥ सुप्रदा  
 भा॥ममलप्रतिभंभभदभा  
 यःप्रविमतिवद्वर॥३३३॥  
 भायंप्रविमतिभवेममाति  
 भाप्रेतिरकभकभी॥१०॥ वि।  
 दयकभातुःमवायुभां सुग।  
 तितिरुमः॥ तिरुभेतिरदद्वरःम  
 मातिभतिगमुति॥१०॥ तथा  
 वृक्षीसुतिःपाऊरैरंप्रापु।  
 विभरुति॥ सुद्वष्टभउकलः

६.  
 गी.  
 दि.  
 ३३



पिब्रुन निवा लभ सु ॥ १३ ॥

उति मीरु गवद्गीता अपनिधु

पुन विदु यां ये गमा भु मीरु

पुन र भं क म भा द्य ये ग र म

दिती ये ष्ट यः ॥ ३ ॥ पुन र ३

राम ॥ ष्ट य भी म द्द म ल सु

भ ३ व द्दिल र द्द र ॥ ३ व्दि क म

लि धि र भं रि ये ल य भि क म

व ॥ ० ॥ वृ मि सु लै व व क्ते र व

दिं भे द य भी व भ ॥ उ मे कं व र

निश्चिद्वेत्तुमेवेदमाध्यामा ॥ ३ ॥  
 श्रीकृष्णार्जुनसंवा ॥ लेकेभिदिदि  
 विणारिधूपुगप्रेजभयान्ध  
 सुयैगेनभसुगंकद्वैगेनये  
 गिरभा ॥ ३ ॥ नकद्र/भभग  
 भुवैधुंमुपुनधेषुते ॥ नमभंर  
 भगद्वैवभिदिंभभणिगसुति  
 ॥ नदिक्त्रिह/भधिएड  
 डिधुडिकद्रुड ॥ कदउहुव  
 मःकद्रभवःपुदडिलैनुलेः

रु.  
 गी.  
 रु.  
 ३३



५॥ कद्मेद्रियालिभंयभृयषु  
मुभरभाभृररा॥ उद्मियाऊ  
विभ्रफुद्मिष्टामारः भउषु  
उ॥ ७॥ यभृद्रियालिभरभा  
नियभृरठउल्लर॥ कद्मेद्रियेः  
कद्मेयोगभभऊः भविमिष्टु  
१॥ नियउंऊरु कद्मेहु कद्मेष्टु  
हुकद्मलः॥ मगीरयाइधिम  
उरभृमिष्टु कद्मलः॥ ३॥  
यल्लऊरु कद्मेष्टुल्लेकेयंक

कुरुतः ॥ ३८ ॥ कुरुतः ॥  
 भक्तभक्तः भक्तभक्तः ॥ ७ ॥ भक्त  
 यस्तुः पूरः भक्तभक्तभक्तभक्त  
 यतिः ॥ भक्तभक्तभक्तभक्तभक्त  
 वेष्टिभक्तभक्तभक्त ॥ ० ॥ भक्त  
 भक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त  
 वः ॥ भक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त  
 भक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त  
 गतिभक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त  
 विष्टः ॥ भक्तभक्तभक्तभक्तभक्तभक्त

क.  
 गी.  
 क.  
 ३८



ऊँ भुवः सवः ॥ ०३ ॥ यल्लुमिः  
मिः भुवः भुवः भुवः भुवः भुवः  
कालुभुवः भुवः भुवः भुवः भुवः  
भुवः ॥ ०३ ॥ भुवः भुवः  
भुवः भुवः भुवः भुवः भुवः  
भुवः ॥ ०४ ॥ भुवः भुवः  
भुवः भुवः भुवः भुवः भुवः  
भुवः ॥ ०५ ॥ भुवः भुवः

नवद्वयतीजयः सध्यायुरिदि  
 यगंभेभेयंपाऊमणीवडि ॥  
 ०१ सधुद्ररडिरेवधुद्रद्र  
 धुद्रभावरवः सुद्रतेवमभनु  
 सुधुधुकदंरविहृते ०१ ॥ नैव  
 उधुद्रतेजोहृतेनकसु  
 नमधुभचहृतेधुकसिद्रउव  
 धामुयः ॥ ०३ ॥ उधुद्रमभऊःम  
 उंकेदंकद्रमभामर ॥ सभ  
 जेहृमरकद्रपरभाप्रेडिधुद्र

६.  
 गी.  
 ६.  
 ३५



धः ॥ १७ ॥ कद्रलिवदिमंभिदि  
भासिउणरक'दयः लेक  
भङ्गदमेवापिसंपृक्तुम  
दमि ॥ ३० ॥ यद्दममरडिमृष्ट  
मुडमेवेउरेणरः ॥ भयद्रुभा  
लंजुमउलेकभुमनवउउ  
३० ॥ नभपाजसिकउहेरिष  
लेकेषुकिपुन ॥ नानवापुम  
वापुहंवउमवमकद्रलि ॥ ३३  
यदिहृदंनवउयंसडकद्र

उद्दि३ः॥ मभवद्भवत्तुभवत्तु  
 पाऊमवमः॥ ३३॥ उद्दि३ः  
 रिमलैकवकुटांकमयेद  
 भा॥ मद्भवत्तुभवत्तुभवत्तु  
 वृमिभाःपुः॥ ३४॥ मकुःक  
 मद्भवत्तुभवत्तुभवत्तु  
 उ॥ उद्दि३ः॥ मभवत्तुभवत्तु  
 वृलैकमद्भवत्तुभा॥ ३५॥ नव  
 दि३ः॥ मभवत्तुभवत्तुभवत्तु  
 दि३ः॥ मभवत्तुभवत्तुभवत्तु

३.  
 ३.  
 ३.



विद्वद्भुक्तः भभागरा ॥ ३७ ॥  
पूढतेः क्रियमा लुगिगुल्लैः  
कमलिभवमः ॥ चदङ्कवि  
अम्भकडुदभिडिभट्टे  
३१ ॥ उडुविडुभदगदेगुल्ल  
कमविठगयेः ॥ गुल्लगुल्लपु  
वडुतेडडिभट्टरमल्लते ॥ ३३ ॥  
पूढतेगुल्लभंअम्भः मल्लतेगु  
ल्लकमभ ॥ डरदडुविठेभ  
कडुविठविठालयेड ॥ ३७ ॥

भयिभचलिकदलभभृष्ट  
 दृष्टमेउभा निगसीदिभ  
 कृष्टपष्टभुविगउष्टः॥३॥  
 येभभउमिदंनिदृभउदिष्ट  
 भाववाः॥सूद्ववउेभयउे  
 भउउेउेपिकददिः॥३॥ये  
 इउददभयउेगउदिष्टिभ  
 भउभाभवल्लरविभुदंभुवि  
 दिरभ्ररमेउभः॥३॥भदुमं  
 मेभ्रउेभभुःपुदउल्लरवरधि

६.  
 गो.  
 ३.  
 ३१



प्ररुडिंयात्रिङ्गुडनिविगुः।  
किंकमिष्टिः॥३३॥उद्दि यष्टु  
द्वियभूङ्गगगुधेवृवभुङ्गे  
उयेवमभागमुङ्गेरुभुपरि  
पत्रिगे॥३४॥मृयादुपदेवि  
गुलःपरममुत्रविङ्गु॥अ  
पदेरिपमंमृयःपरमदेरुयाव  
दः॥३५॥मृलुनउवास॥मृष  
करपृयुङ्गेयंपंमरतिप्रम  
धः॥मृनिमुत्रपिवाद्देयरला

दिवसियेणिउः॥ ३० ॥ शुक्र  
 काववाय॥ कभसधैरुणसध।  
 गलेयु॥ मभुदुवः॥ भदसिरे  
 भदपापुविदुरभिदवैरि॥  
 भा॥ ३१ ॥ प्रभेरात्रियउवदि  
 दषामसैभलेरम॥ यषेत्त्रि।  
 नकउंगदुसुषाउरेरभाकउ  
 भा॥ ३२ ॥ सुकउङ्गुनभेउरदु  
 निरेरिद्वैरि॥ कभउप॥  
 केउयदधुग॥ नलेरम॥

क.  
 गी.  
 द.  
 ३३



३७ ॥ उद्दिष्टाणि भवेद्विद्वा  
भूतिष्वाभवेत् ॥ तत्रैव भवेत्  
यद्दृष्टं न भवेत् इति न भवेत्  
४ ॥ उद्दिष्टाणि भवेद्विद्वा  
यद्दृष्टं न भवेत् ॥ पापं न भवेत्  
दिष्टं न भवेत् इति न भवेत्  
५ ॥ उद्दिष्टाणि भवेद्विद्वा  
यद्दृष्टं न भवेत् ॥ भवेत् न भवेत्  
गद्दृष्टं न भवेत् ॥ भवेत् न भवेत्  
६ ॥ उद्दिष्टाणि भवेद्विद्वा  
यद्दृष्टं न भवेत् ॥ भवेत् न भवेत्

नभाद्रा ॥ एजिसंभद्रवर्ज  
कभद्रपुंगुगभद्रभा ॥ २३ ॥

उजिसंभद्रवर्ज ॥ अथनिवर्ज ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥ ४ ॥ श्रीकृष्ण ॥

वर्जविष्टपुंगुगभद्रवर्ज ॥ ५ ॥ श्रीकृष्ण ॥

ठ.  
गी.  
म.  
३७



पराशरप्रभिमंगलद्वयेविदुः  
भक्तलेखमजडयैगैरधुः  
परत्रय ॥ ३ ॥ सातवायंभयाउदु  
योगःपूजःपराउरः ॥ ठकेभिभ  
सापामेडिरजमुंरुउदुभभा ॥  
३ ॥ पुनरउवा ॥ मपमंठवेउ  
एदपमंएदविवधुः ॥ कष  
मेउद्विसरीयंडुभादेपूजवा  
रिति ॥ ८ ॥ श्रीहगवावाम ॥ व  
कृतिभेवृडीउरिएद्वरिउवमा

ॐ  
गो.  
म.  
ॐ.



ममभेदिहृभेवंयेवेडिउडुः  
इडुमेदंपरल्लमैडिभामेडि  
भेल्ल॥७॥वीडागळयरेण  
भमयाभाभुपामिडः॥ठळवे  
ल्लपभापुडभमुवभागडः  
०॥येयषाभांपूपडुडंभुवे  
वळसृजभा॥भभवडुवडु  
उभउष्टःपाऊसचमः॥००॥  
कडुडाकडुलंमिडिंयणउ  
उडुमेवडः॥दिपुंदिभाउषा॥

लेकेभिदिठवतिकदस॥०३॥  
 गउचलुंभयाभधुंगुलक।  
 मविठगमः॥उभुकडुगभपि  
 भांविदुकडुगभद्ववभा॥०३॥  
 रभांकदलिलिभुडिगभेक  
 ददलेभदु॥५३॥भांयेठि  
 सगडिकदठिउभरष्टउ॥०४॥  
 मवंलुइरुडंकदप्रचैरपिभ  
 भुदुठिः॥ऊरुकद्वैवउभदं  
 प्रचैःप्रचउरंदउभा॥०५॥किं

ठ.  
 जी.  
 म.  
 ३०



कमकिभकमेतिकवयेपृ३।  
मेजिः॥ उडुकमपूवहभिय  
हृदभेहृमसुठ॥ ०१॥ कम  
लिहृपिरेहृहृवेहृहृमविक।  
मलः॥ पुकमलसुवेहृहृगद  
रकमलिगतिः॥ ०१॥ कमपृ  
कमयः पपृमकमलिमकम  
यः॥ सवृदिभामपृपृमय।  
ऊः रुद्रकमरु॥ ०३॥ यभुभ  
वेभभगंठकभभंकलवल्लि

३॥ ह्यग्निरुपकृष्टं तं उभा  
 ५॥ पश्चिउवणः ॥ ०७ ॥ ह्युक्त  
 ५॥ दलाभं निरुद्धं येन गप्यः  
 ५॥ कश्चिपिपुवडेपि नैव किञ्चि  
 ५॥ ह्येतिभः ॥ ३० ॥ निगमीदुमि  
 ५॥ उद्धृष्टमवपरिगुहः ॥ मारी  
 ५॥ रंकेवलंकमज्जचत्रायेति कि  
 ५॥ लिपभा ॥ ३० ॥ यद्गुलाठ  
 ५॥ भुवुद्धदुडीतेविभङ्गरः ॥ भ  
 ५॥ भः भिद्ववभिद्वेमरुइधिर।

ठ.  
 जी.  
 म.  
 ५३



निवृत्ते ३३ गउमङ्गभुभङ्ग  
पुनवभित्तमेउमः यल्लयम  
रउः कदमभगंभुविलीयते  
३३ वृक्षदं वृक्षदविबुक्ष  
ग्रेवृक्षदं वृक्षद विबुक्ष  
वगउवृक्षद कदमभभाणि  
उमः देवभवापरयल्लयगिरः  
पदुपामउ वृक्षग्रावपरय  
ल्लयल्लयवैवैपल्लयदति ३५ मे  
इमीरीदियाउवृक्षभयभाविषु

सुकृति॥ मन्मथीविधयान्ते॥  
 द्विगविषुसुकृति॥ ३०॥ भवा  
 लीद्वियकदलिप्रालकम  
 लिमापरे॥ पुद्गमंयभयेगात्रे  
 सुकृतिह्वरमीपिते॥ ३१॥ मृद  
 यल्लुभुपैयल्लुयेगयल्लुभुषा  
 परे॥ भृष्टयल्लुयल्लुसुययः  
 मंसिउत्तः॥ ३२॥ चपात्रेपा  
 कृतिप्रालं प्रालपात्रेउषापर  
 प्रालपात्रगीनद्रुप्रालया।

ठ.  
 गी.  
 म.  
 ३३



अपराधः॥३७॥ सुपरिव  
उदराः॥३८॥ सुपरिव  
मवेष्टेयं विष्टेयं कृपि  
उकल्पः॥३९॥ यल्लुमिष्ट  
भुङ्क्तेऽपि विष्टेयं भुङ्क्तेऽपि  
नयं लोके भुङ्क्तेऽपि भुङ्क्तेऽपि  
रुमभु॥४०॥ एवं रुरुविष्ट  
सुविष्टा रुरुमिष्टा॥ कर्म  
विष्टा रुरुमिष्टा विष्टा रुरुमिष्टा  
म॥४१॥ सुपरिव सुपरिव सुपरिव

नयद्गुः परत्रय ॥ सचं कर्मणि ।  
 लंपाङ्गुलेपरिभभापुते ॥ ३३  
 उद्दिदिपुलिपातेपरिपुत्रे ।  
 नमेवया ॥ उपदेहृतिउद्गुं ।  
 हृतिभुदुमसिः ॥ ३४ यद्गुं  
 हृत्पुर्देनमेवयाभुमिपा  
 'इव' येरुद्गुत्तमेधो'दुदु  
 हृत्पुर्देमि ॥ ३५ चपिममसि  
 पापेहः भवेहः पापदुभः ॥  
 सचं हृत्पुर्देमि ॥ ३६

६.  
 गी.  
 म.  
 ३५



विष्टमि ॥ ३० ॥ यथेयं मिममि  
 द्विष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३१ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३२ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३३ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३४ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३५ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३६ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३७ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३८ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ३९ ॥  
 नयिष्टिष्ठममभुनउल्लर ॥ ४० ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

८०॥ योगभक्त्युक्तमं॥ ८१॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८२॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८३॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८४॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८५॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८६॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८७॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८८॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ८९॥  
 भक्तिभक्त्युक्तमं॥ ९०॥

कगवल्लीऽमुपनिषद्बृहद्वि  
हृद्ययोगमाप्नुमीकश्चात्

क.  
ग.  
घ.  
ङ.



नमो भगवते कर्मभूतमयै गौरीभ  
 यदुक्तेष्टायः ॥ ८ ॥ यत्पुनरु  
 वास ॥ विमंशुभंकर्मलं रु  
 धूपरदेगंमसंभमि ॥ यत्पु  
 यपउयेरेकं उदेवृजिभुरि  
 सिउभा ॥ १० ॥ श्रीरुगवतुवा  
 मंशुभः कर्मयोगवृनिः प्रयम  
 कगवृठे उयेभुकर्मभंशुभा  
 कर्मयोगेविमिष्टु ॥ ३ ॥ ल्लयः  
 भूरिहंशुभीयेरइधिरक

इति निद्रुद्धे जिभदवादेभापं  
 वरुद्धभृते ३ ॥ भापुयेगे  
 पवगुलाः प्रवमतिरपशि  
 उः ॥ सकभभृभिः भभृगुठ  
 येचिउडलभा ॥ ४ ॥ यद्धे  
 भभृतेभुरंउद्देगैरपिगभृते  
 सकंभाहंमयेगंमयः पभृति  
 सपभृति ५ ॥ भभृमभुभद  
 वदेदः अपभृभयिगतः ॥ ये  
 गभृतेभनिरुद्धमिराणि

रु.  
 गी.  
 पं.  
 ३



गङ्गादि १० योगयुक्ते विषुद्धम्  
विणिङ्गन्ति उद्दिष्टः भवतु  
उद्दिष्टं उद्दिष्टं च त्रिपरिणितम्  
१० वैवकिङ्गिङ्गं भीति युक्ते भ  
वतु उद्दिष्टं ॥ पञ्चाङ्गं उद्दिष्टं  
हि पञ्चाङ्गं उद्दिष्टं पञ्चाङ्गं  
३० पुलापविभण्णं उद्दिष्टं  
पञ्चभिषत्रपि ॥ उद्दिष्टं लीङ्गि  
याङ्गं भवतु उद्दिष्टं गयरा ॥ ७  
वृद्धं उद्दिष्टं कर्मलिभङ्गं उद्दिष्टं

करेडियः लिष्टुउरभथापेरथद  
 पइभिवाभुभा ०० कयेरभर  
 भावइकेवलैरिद्रियैरधि ।  
 यैरिगः कद्रऊचत्रिमं डड  
 दमुदुये ०१ यऊः कद्रढलं  
 डडमात्रिभापेडिरेष्विकीभा  
 पयऊः कभकरिढलैभऊ  
 निवष्टे ०३ सचकद्रलिभर  
 भाभंरुष्टुभुभंरमी नवड  
 अपुरेद्रैवऊचत्रकंरयरा

४.  
 गी.  
 यं.  
 ३१



०३ नकद्वंद्वनकद्वल्लोकभृ  
भृण्डिपुत्रः नकद्वल्लभं  
योगं भृवभृपुत्रुते ०४ रा  
मद्वकभृमिद्वपंरमेवभृद्वं  
पुत्रः ॥ भृल्लोरावद्वंल्लंतेभृह  
त्रिणुवः ॥ ०५ ॥ ल्लोरावद्वंल्लं  
रंयधंरासिभृद्वः ॥ उधभा  
मिद्वल्लंरंभृकमयतिउधभा  
०६ ॥ उधद्वयभृद्वभृभृत्रिभृ  
भृद्वयल्लः ॥ गभृभृपुत्राव

डिङ्गुनित्रउकल्मथाः ०१ वि  
 दृविनयमपत्रेवृकालिगा  
 विदसिनि सुविमैववृपाके  
 गपदिङ्गुः भमद्विः ०२  
 उदैवउलिङ्गुः भन्तेयेधंभाष्ट  
 सिङ्गुभरः निद्वेधंदिभमंवृक  
 उमंङ्गुकालिउसिङ्गुः ०३  
 रपहुष्टेदिङ्गुंयंपाष्टेदिङ्गु  
 पुमापियभा सिङ्गुवृद्धिभं  
 केवृकविङ्गुकालिसिङ्गुः ३

ठ.  
 गी.  
 पं.  
 ३३



गुरुभ्यः प्रमत्तविद्वद्भ्यः  
वियद्गणभाः सवृक्षयोग्या  
ऊर्ध्वभापमदयमपुत्र ३०  
येदिभंभचरुहेगादुःपये  
नयपचउ सुदुत्रवतः केतुय  
नउपुगभउत्रुः ३१ मकेरी  
देवयः भेदं पूज्जगीरविभेद  
॥७॥ कभरेपेद्ववेगंभय  
ऊः भभापीरः ३३ येतुः सु  
पितुगगभभुषउत्तेतिरेवयः

मयैगीवृक्षनिवांमं वृक्षकुंडे  
 गिरासुति ३२ लठउवृक्षनि  
 चालभययः कीलकल्लधाः  
 किन्नैणयडाइनः भवकुंड  
 जिउगडाः ३५ कभंउणविय  
 उगंयगीगंयउमंभाभा म  
 ठिउवृक्षनिवांमं वउउविमिडा  
 दगभा ३७ मज्जावृक्षवजि  
 उहंमकुपुवउगकुवेः ५॥  
 लुपानैमभेहदगभाहउर

६.  
 गी.  
 पं.  
 ३७



सगिणि ३१ यउदिप्रभनेत्र  
दिप्रनिमेदयगयलः विग  
उक्त कयनेपेयः भद्रभक्त  
वभः ३३ किकरंयल्लुपभं  
भवलेकभद्रपुरभा अहमं  
भवकुगंरंल्लुपभं सगिभ  
मुति ३७

॥ अहमं किकरंयल्लुपभं  
॥ अहमं किकरंयल्लुपभं  
॥ अहमं किकरंयल्लुपभं  
॥ अहमं किकरंयल्लुपभं ॥ ५

पैयसिः

कमलं कंदं कंदं करेणियः

भभत्रुभीमयोगीश्वरविश्वि

त्रयः ० यंभत्रुभमि

विभ्रुदेगं विविधिया

रहभत्रुभमद्वल्ये योगीश्वर

विक्रम ३ पुरुषदेवदे

गंकमकगलभुष्टु योग

रुष्टुभुष्टुवमभः कगलभुष्टु

उ ३ यमजिरीद्विष्टुष्टु

ठ.  
गी.  
ध.  
३.



नकमभुवधल्लो भवमह  
ल्लभवृभीयैगाद्रुभुमेष्ट  
उ ८ उद्धरेमद्राद्धनंनद्र  
नभवशाद्ययज पुष्टैवहृष्ट  
नेवत्रुगष्टैवविप्रगद्धनः ॥ ५ ॥  
वत्रुगद्धनभुष्टयैवष्टैव  
नलिः ॥ पत्राद्धनभुमद्रुष्टैव  
उद्धैवमद्रुवज ७ लिः ॥  
नः पुमात्रुष्टपरभाद्धनभाजि  
उः मीउष्टभापद्धनपुत्रव

भाग्यभावेः १ सुखविह्वल  
 श्रुतश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः  
 यज्ञश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः  
 कान्तः ३ अहमिहयुग  
 भीमभयश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः  
 शुषिमपायश्रुतश्रुतश्रुतः  
 श्रुत ७ योगीश्वरश्रुतश्रुतः  
 श्रुतश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः  
 श्रुतश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः  
 ०० सुखश्रुतश्रुतश्रुतश्रुतः

क.  
 गी.  
 य.  
 २०



भरभाद्रः ननुष्टिउंरातिरी  
मंमैलाणिरकुमेडुभा ००  
उडैकगंभररुडयउमिडुमि  
यद्रियः उपविष्टभरयुडु  
हुंगभाद्रविमुडुये ०१ भंभ  
कयमिरेगीधंणयउमलं  
भिरः भंपुडुनाभिकगंभं  
मिमपुनवलैकयरा ०३  
धुमाडुद्रविगअरीवृक्रम  
विबुडेभिरः भरःभंयभुभमि

डेयुऊभूमीउभरः याहूत्रैवं  
 भद्रंयैगीनियउभरमः  
 मातिंनिचापपरभंभद्रंभु।  
 भणिगमुति ०५ गहप्रउभु।  
 यैगीभिरमैकउभरमुतः रमा  
 डिभप्रमीलभूसगैनेवगह  
 र ०६ युऊदगविदग्भुयुऊ  
 मभ्रभ्रकदभ्र युऊभ्रप्रवै  
 उभ्रयैगीरुवडिदःपद ०७  
 यद्रविनियउंमिडुभाहूत्रैवं

ह.  
 गी.  
 प.  
 ५३



वशिष्ठ उ विः भद्रः भवक मे  
हेय उ उहृष्ट उ उह ०५ यथा  
मीधे निवा उ भुने उ मेधभा  
भद्र उ योगिनेय उ मि उ भुष्ट  
उ योगभाद्रः ०७ यथेधभा  
भद्र उ मि उ निरु उ योग भवया  
यथे मेवा उ न उ प उ भुष्ट उ नि  
उहृष्टि ३. भ्रातृभाद्र उ निरु  
य उ भुष्टि उ न उ भुष्टि उ भ्रा  
वेदि य उ न मेवा यं भुष्टि उ भ्रा

३३३: ३० यंलक्ष्मणपरांला  
 कंभउउगणिकं३३: यभिद्रि  
 उरमल्लेयम॥७॥पिविमल्ल  
 उ ३३ उंविष्टमःपमंयेगं।  
 वियेगंयेगमंलिउभा मनि।  
 अयेरयेउहेयेगंरिविल्लमउ  
 भा ३३ संकलप्रठवाकुभं  
 भुक्तमचारमेषउ: भामेव  
 द्रियगमंविनियष्टमभउउ:  
 ३४ मरै:मरै:रुपरमदुष्टप

रु.  
 जी.  
 प.  
 २३



१॥ डिगजीःया सुद्धभंभुंभरः॥  
द्वरकिंसिमपिमितुयैड  
३५ यैयैरिभुभिमरभुभ  
लभभिरुभा ३३ सुयैरियभैड  
भाद्रवैवमंरयेड ३७ भूम  
भुभरभंभुंरंयैगिंभुभभुभ  
भा ३५ यैडिमातुगणभंभुं  
भुभकलभभा ३७ युद्ध  
जैवंभद्रभंयैगीविगडक  
लभयः भुभरभुंभंभुंभ

इउंभापमपुउ ३३ भवकुउकु  
 भाइरंभवकुउरिगाइरि ॥ ३॥  
 कुउयेगपुकुइ भवइभमम  
 ज्ञः ३७ येभापपुडिमवइ  
 भवंमभयिपपुडि ॥ उभुदंरप  
 लपुमिभमपभपुलपुडि ३  
 भवकुउसिउंयेभाठणउक  
 भासिउः भवषावउभावेपि  
 भयेगीभयिवउउ ३० पुके  
 पपुनभवइभंभपुडियेत्तर

क.  
 गी.  
 ध.  
 इ.



भापेवाद्यमिवाकृत्तंभयेगीप  
रमेभतः ॥ ३३ ॥ यत्तत्र ॥  
येयंयेगभुयाप्रेतः भाभुरभ  
प्रभुमर ॥ ३३ ॥ यत्तत्र ॥  
दुलद्विदिभिर्गभा ॥ ३३ ॥  
माद्वलंदि ॥ ३३ ॥ यत्तत्र ॥  
वलवद्वरुभा ॥ ३३ ॥ यत्तत्र ॥  
दंभतुवायेविवभद्वरुभा ॥  
३३ ॥ यत्तत्र ॥ ३३ ॥  
नयंनयंनयंनयंनयंनयं

लभा ॥ बृहन्मन्त्रकैत्रेयवेग  
 गौतमगृह्ये ॥ ३५ ॥ मन्त्रयत्  
 द्वायेगौतमपुत्रः ॥ ३६ ॥  
 बृहन्मन्त्रयत् ॥ ३७ ॥  
 पायः ॥ ३८ ॥

गौतमपुत्रः  
 भार्गवः ॥ ३९ ॥  
 द्विकंगतिं द्वायेगौतमपुत्रः ॥ ४० ॥  
 कश्चिन्नैठयविद्वद्भिरुक्तः ॥ ४१ ॥

क.  
 गौ.  
 ध.  
 २५



देविप्रदेवक्रानःपवि ३३  
पउममंमयंरुपुमुमुभद  
भुमेधतः इमवःभंमयभु  
भुमुमुवदुपपहउ ३७

पाऊवैवेदरा  
भउविरामभुभुविहउ ॥ नदि  
कलुलरुहसिदुनतिउउ  
गमुति ॥ ४० ॥ पापुपुहउ  
लेकउधिदुमासुतीःभभाः  
सुमीरंमीभउंगेदयेगइभुः

किरयउ ॥ २० ॥ प्रववायेगिरा  
 मेवकुलेठवडिणीभउभा ॥ २१ ॥  
 उडिडलउउउंलेकेणमयमी  
 रुमभा ॥ २२ ॥ उउउवडिभंये।  
 गंलठउथोवमैदिकभा ॥ २३ ॥  
 उउमउउकुयःभंभिडुकुमन  
 रुन ॥ २४ ॥ प्रवहुमेउउवडि  
 यउहुवसेपिभन ॥ २५ ॥  
 रपियोगभुमववडिउउ  
 २६ ॥ प्रयडाहुउभनभुयेगीभं

क.  
 गी.  
 ध.  
 २०



मुद्रकिलिधः ॥ पाकणमभं  
भिदुभुडियाडिपगंगडिभा ॥  
२५ ॥ उपभिहृणिके योगीहृनि  
हृपिभंडेणिकः ॥ कद्रिहृणा  
णिके योगीभंडेगीठवाहृन  
२६ ॥ योगीभभिभवेधामभंड  
उगउगहृन ॥ मुद्रवाहृणउ  
योगीभमयउउभेभडः ॥ २७ ॥

उडिमीठगवहृन ॥ उपनिधु  
उकदिहृण योगीभमयमीठ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वा नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
पादयेगं वासुदेवमयः ॥ १ ॥  
मंसयंममगंमंयवास्तुमि  
उक्त ॥ ० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमिदं वदन्मममयः ॥ यद्वा  
इति नमो वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
कश्चिद्वातिमिदं यद्वा

ॐ  
गो.  
म.  
ॐ



पिभिर्दुःसंकल्पिभ्योऽपि उच्यते  
३॥ इति गम्यते लोकाः एवम्  
नेव द्विरेवम् ॥ अथ ह्युच्यते  
यमेति वा पुरुषि रश्मिः ॥ ४॥  
अथ गम्यते भित्तुः पुरुषि वि  
द्विमेव गम्यते ॥ एतन्नुच्यते  
दत्तं देयं यदंशं दत्तं एव गतं  
५॥ अथ ह्युच्यते निरुद्धं विभक्तं  
इत्युच्यते ॥ अथ ह्युच्यते  
गतः पुरुषः पुरुषः सुखा ६

क.  
गो.  
भ.  
इड



पञ्चभराउरभा॥ बुद्धि बुद्धिम  
उभमिदोणसुणधिरामदभा  
००॥ चलंचलवउमाभिकभ  
गगविवलिउभा॥ एदविमई  
कुउधुक्भेभिठरउदठ॥००॥  
येमेवभाद्विकठवागणभाभु  
भभासुय॥ भडावेडिउविद्धि  
रहुजंउधुउभयि॥०१॥ शिठिउ  
॥ भयेद्वैरेठिःभवभिंण  
गडा॥ भेजिउंठिखरातिभभ

इः परमवृत्तभा ॥ ०३ ॥ द्वैवीह  
 धागुलभयीममभायादुरह  
 या ॥ भामेवयेपूपदृतेभाया  
 मेडंउरत्रिडे ॥ ०४ ॥ रभांमृष्टि  
 नैभ्ररुःपूपदृतेरगभाः ॥  
 भाययापहउल्लरापुभ्रंरु  
 वभामिडः ॥ ०५ ॥ महुविणःरु  
 एत्रिभांएराभ्ररुडिःनेल्लर  
 पुडेलिहभ्रजजीहूरीमरु  
 उदरु ॥ ०६ ॥ उधाल्लरीनिहयऊ

रु.  
 गी.  
 म.  
 २७



मकरुक्तिविमिश्रिते॥ प्रियेति  
सुनिरेहृजमदंसमभमभपियः  
०१॥ उदराःभवत्वेडसुनीड  
द्वैवमेभउभा॥ उभिउःभदि  
युज्जम्भामेवउभंगतिभा  
०३॥ वक्रगणमराभउल्लर  
वम्भूपपहुउ॥ वभुदेवःभव  
भिडिमभदम्भुदल्लरः॥ ०७  
कभैभुभैहउल्लरःपूपहुउ  
हृदेवडः॥ उंउंनियभभाभुय

पूरुडुनियतः शुभा ॥ ३० ॥ ये ये  
 यं यं उचुठुः शुद्धयामि उभि  
 मुनि ॥ ३१ ॥ शुभं शुभं लं शुद्धं शुभं  
 वविमण शुभं ॥ ३० ॥ मउय  
 शुद्धयामि शुभं शुभं शुभं शुभं  
 लउम उः कं भा शुभं वविमि  
 उदिश ॥ ३३ ॥ शुभं शुभं लं  
 उभां शुभं शुभं शुभं शुभं  
 वा शुभं शुभं शुभं शुभं  
 भाभयि ॥ ३३ ॥ शुभं शुभं शुभं

क.  
 जी.  
 म.  
 य.



पत्रं भवतु भवतु यः ॥ परं  
ठव भवतु भवतु यमवतु  
भवा ॥ ३८ ॥ नदं प्रकमः भव  
भुये गभा या भवा वतः ॥ अमे  
यं राठि स राठि ले के भामा  
भवतु यभा ॥ ३५ ॥ वेदं भमती  
उरिवतु भा रा विमाल ॥ ठवि  
शालिमकु उरिभं दुवेद रक  
॥ ३९ ॥ उमुदुध भमभु रदुदु  
भेदे रठ रत ॥ भवतु उरिभं भेदे

भजेयत्रिपरात्रुप॥३१॥येधं॥  
 इउजंथापंएरांयंष्टकम  
 ॥भा॥उइइभेनरिमुजंठ  
 एउभंमुमुवुः॥३३॥एरा  
 मरा॥भेकयभाभामिहयउ  
 त्रिये॥उवुऊउडिमुःरुडुम  
 टंकेकममापिलभा॥३७॥  
 भाठिऊउठिदैवंभाभापिया  
 एंमयेविमुः॥पूया॥कलै  
 थिमुभांउेविइडकुसेउमः॥३८॥

ठ.  
 गो.  
 अ.  
 ५०



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ निधनम् ॥  
 ब्रह्मविद् यं योगसाधुमीदृ  
 ललातमन्त्रं हृत्विद् हृत्विद्  
 गिराममपुमैः उष्टयः ॥ १ ॥  
 ललातमन्त्रं ॥ ऐं किं उष्टयः किं  
 भष्टयः किं कष्टयः पष्टयः ॥  
 पष्टयः किं पष्टयः पष्टयः ॥  
 किं पष्टयः ॥ ० ॥ पष्टयः क  
 पष्टयः किं पष्टयः पष्टयः ॥  
 पष्टयः किं पष्टयः पष्टयः ॥

यड्मिः॥३॥ श्रीरुगवा ३॥  
 ॥ पदं वृक्षपरमं भुवनेष्ट  
 द्भुष्टे॥ कुडवेष्टुवकरेवि  
 भनः कद्रमंल्लिः॥३॥ पणि  
 कुडवेष्टुवः पुमधस्तुपिमेव  
 भा॥ पणियल्लिमेवाष्टुमे  
 देष्टुवः॥४॥ पत्रकले  
 मभामेवभ्रग्दुक्तकलेवर  
 भा॥ यः प्रयातिभभुष्टुवेष्टुति  
 राभुष्टुमंमयः॥५॥ यंयंवापि

ठ.  
 गी.  
 म.  
 प३



भद्राङ्गुवंदणदृष्टेकलेवभा  
उंउमेवैडिकैत्रयभद्रउङ्गुवठ  
विडः॥१॥ उभद्रङ्गुचेषकलेष  
भामत्रभद्रयष्टम॥ भद्रुद्विड  
भनेत्रुद्विष्टमेवैष्टुष्टुसंमयः  
॥१॥ षष्टुसंमयैष्टुष्टुसंमयः  
त्रुगामिरा॥ परमंष्टुष्टुसंमयः  
याडिपाङ्गुत्रुमिष्टुष्टुसंमयः॥ उ॥ क  
विष्टुष्टुसंमयैष्टुष्टुसंमयः  
रालीयंभमत्रभद्रुष्टुः॥ भव

भृण्डारभसितुडुपमादिद्व  
 लंउभमःपरभुज॥७॥प्रय  
 मकलेभरभामलेरठकुय  
 केयोगरलेरमेव॥दूवेमष्ट  
 प्रामभावेसुभभृक्तुंयंभ  
 मधभपैरिमिद्वभा॥०॥यम  
 द्वावेमविमेवरुत्रिविमत्रिय  
 द्वावेवीउगगाः॥यमिमुत्रेव  
 क्रमदंमरत्रिउडुपमंभद्र  
 मप्रवद्वे॥०॥भवद्गलिभं

४.  
 गी.  
 प्र.  
 ५३



यधुभनेहमिदिहदुम ॥ अचु  
मयादुनः पूलभासिउयेगा  
एगलभा ॥ ०३ ॥ तिमिहक  
करं ब्रह्मदरमभरभररा  
यः पूयाडिहएनेदं मयाडि  
परभांगडिभा ॥ ०३ ॥ चरहमे  
तः मउतं येभां मरडिदिहमः ॥  
उभुदं मलठः पाऊरिहयऊ  
भुयेगिरः ॥ ०८ ॥ भाभुपेडिपु  
लदुदः पालयभमापुभा

नपुवतिभदम्भः संभिदिप  
 रभांगः ॥ ०५ ॥ सुत्रकुरुवरा  
 लोकः पुरावतिरेल्लर ॥ भाभ  
 पेट्टकेतेयपुल्लदरविदु  
 उ ॥ ०६ ॥ भदभयुगपदनुभद  
 ददुक्रमेविदुः ॥ गरियुगभा  
 दभुजुंतेजेरुविदेणराः ॥  
 ०७ ॥ पवुजुदुयः भवाः पू  
 ठवतुदगगमे ॥ गहगमेपु  
 लीयतेउरेवन्नुमंल्लके ॥

ठ.  
 गी.  
 द.  
 प.



ॐ शुभं भवतु ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

भुवि कुडु नियो भव भिमं उड  
 भा ३३ ॥ यश्च लङ्गा कडि  
 भा कडि मेव ये गिरः ॥ पूया ड  
 य त्रिउं कलं वहु भिठ ग उड  
 ठ ३३ ॥ पयिल्ले डिगः बुल्लः  
 ध ॥ भ ॥ उड ग य ॥ भा ॥ उ  
 इ पूया ड ग मुडि वूळ वूळ वि  
 दिण गः ॥ ३८ ॥ पुमो डिअ वा  
 ठ ॥ ध ॥ भ ॥ भा ॥ कडि ॥ य  
 भा ॥ उड ग ग ॥ भ ॥ भ ॥ डि ॥ डि ॥ गी ॥

ठ.  
 गी.  
 प.  
 ५५



प्राप्तनिवृत्तः ७५ सुक्तरुद्धे  
गम्रीहेउएगः मा सुउभम  
तकयाया ह्या वडिभनृया  
वउउपरः ७६ वैउभजीपा  
ऊररुगीभरुडिक सु ३  
भरुचेधकलेधयोगयऊरु  
वाल्सर ७७ वेरुधवल्लुधउ  
पभमेरुधययदुहदले  
पुदिधुभा ७८ पउरुडिउरुचमिमं  
विदिहृयेगीपरंभूरभयेडि

महर्षि ॥ ३३ ॥ श्रीगुरुगवतः

उत्पन्नधनुर्विदुषां योग

महर्षीरुद्राक्षरमंत्रादिभद्र

पुनर्धनयोगेनाभाधुमेष्टयः ॥

३ ॥ श्रीगुरुगवतः ॥ वै ७८८३

उत्पन्नधनुर्विदुषां योग

महर्षीरुद्राक्षरमंत्रादिभद्र

पुनर्धनयोगेनाभाधुमेष्टयः ॥

३ ॥ श्रीगुरुगवतः ॥ वै ७८८३

उत्पन्नधनुर्विदुषां योग

महर्षीरुद्राक्षरमंत्रादिभद्र

पुनर्धनयोगेनाभाधुमेष्टयः ॥

८.  
गी.  
३.  
८



मह्यभा ३ प्रसूतः ५  
रुधः ० दृष्टुपुपु ५ ५  
पृभां विवउते मइसंभा ३ वइ  
वि ३ ॥ मयउउमिदं मवंग  
गदृउअडिना ॥ मइरिमव  
इउरिरमा जंउधुवभिउः ॥ ८  
रममइरिइरिपुमेयोग  
मैसुभा ॥ इउइउमइउमे  
भाइइउठ'वरः ॥ ५ ॥ यषकम  
भिउरिउंवायः मवइगेमदरा

उवाभवालिङ्गुडनिभदुसीडुप  
 णगय ॥ १ ॥ भवङ्गुडनिकेडुय  
 पूरुडिंयाडिभाभकीभा ॥ क  
 ल्पदयेपुनभुनिकल्पदेवि  
 भसृष्टमा ॥ १ ॥ पूरुडिंभ  
 वभृङ्गुविभसमिपुनःपुनः ॥  
 कुङ्गुभमिभंरुभुभवसंप्रु  
 उचमाङ्ग ॥ ३ ॥ नमभंङ्गनिक  
 द्धमिनिवप्रतिप्राङ्गुय ॥ ३ ॥  
 भीरवमभीरभमकुंउधकम

ह.  
 गी.  
 न.  
 ५१



५॥ ७॥ भयः पृथक् पृथक्  
सुखे भयमस्य भयं जेदु रा  
नरके ते य ए ग द्वि परि व ड ड  
०. पव ह र ति भं भुक्त भात  
धी उ न भा मि उ भा ॥ प रं ठ व म  
ह र तेः स व कु उ भ ज सु र भा ॥  
मे धा स मे ध क दं लि मे ध ह  
रा भ मे उ भः ॥ रा ह सी भा भुं गी  
मे व पृ थ डि भं जि री मि उः ॥ ७४  
भ ज ह र सु भं पा ड मे वी पृ थ

डिभासिउः॥ कएउरउभरमेहु  
 इहुइमिमहयभा॥ ०३॥ भउं  
 कीउयउंभंयउउसुनरुवः  
 नमभुउसुभंरुहुनिहयऊउ।  
 पाभउ॥ ०४॥ सुनयल्लरमाधु  
 देयएउंभाभपाभउ॥ एकह  
 नपवउंररुणविषुंभापभा  
 ०५॥ सदेरुउरुंयल्लःसुण  
 नमनमोपठभा॥ भउंनमन  
 मेवाणमनमगिरुंरुउभा॥

क.  
 गी.  
 न.  
 पउ



००॥ पिडाजमभृणगतेभाडा।  
णडापिडाभजः॥ वेदुपविशमे  
द्वगदज्ञमयणगेवम॥०१॥  
गडिठड'पुडुःभादीरिवाभः  
मरांभरुग॥ पुठवःपुल।  
यभुरंरिणंरीणभदृमुभा  
०३॥ उपाभृजमजंवेदुनिगद  
पुडुसभिम॥ चभउमैवभ।  
इष्टमममज्ञाजमलुर॥०७॥  
इविदुभांभैमपाःपुउपापा

क.  
गी.  
न.  
पु.



येष्टुष्टुचडाठऊयणउेपुइ  
यात्रिडाः॥उेपिभाभेवकउेय  
यणउुविणिप्रवकभा॥३३॥  
पुंमभवयल्लुंकेऊमपूऊ  
उेवम॥नहुभाभठिसरउिउहु  
नः॥उुवउिउ॥३४॥यात्रिमे  
ववुडांमेवादिहृहृउिपिइ  
वुडाः॥ऊडरियाउिऊडेहृया  
त्रिभहृणिउेपिभाभा॥३५॥  
पंरुपंरुलंउेयंमेरुऊप

यच्चरि ॥ ३२ ॥ जंठ कुप हउ मप्र  
 मिप्र यउ हउः ॥ ३३ ॥ यच्चरि  
 यप्र मिप्र यच्चरि मिप्र मि  
 यउ ॥ यप्र मिप्र मिप्र मिप्र  
 कुप मिप्र मिप्र मिप्र ॥ ३४ ॥ सुठ  
 सुठ लैर वं भेद मेक मर  
 वरः ॥ भेद भेद भेद भेद विप्र  
 कुप मिप्र मिप्र मिप्र ॥ ३५ ॥ भेद  
 भेद भेद भेद भेद भेद भेद  
 यः ॥ यच्चरि मिप्र मिप्र मिप्र

क.  
 गी.  
 न.  
 ७.



यिरेउधुमाधुनभा ॥ ३७ ॥ यपि  
मेदुदगमारेठणउभाभरत  
क'क' ॥ भापुरवमभउहःभा  
भुदुवमिउंजिमः ॥ ३८ ॥ दिपं  
ठवडि० रु दमसुसुडिंरिगसु  
डि ॥ केउेयधुडिस्त्रीजिमठजः  
धुलसुडि ॥ ३९ ॥ भादिपाजवृ  
धामिदुयेपिधुःपापयेरयः ॥  
धियेवैष्टाधुवाधुदुधुधिया  
डिपंगगडिभा ॥ ४० ॥ दिपरा

ईक ७: ५ ७७ ७७ ७७ ७७ ७७  
 भुव परिदृभभुपंलेवभिमं  
 भृष्टलभुभाभा ॥ ७७ ॥ भद्र  
 नठवभद्रुजेभद्रुणीभंनभ  
 भुव ॥ भभिवैभुभियेकुवभा  
 भंभद्रगयलः ॥ ७७ ॥ उडि  
 श्रीगवद्गीताभुपनिषद्भुव  
 कविदृयांयोगमाभुषीद  
 भुलभंवादेगणविदृग  
 भगवद्गीताभनवभेष्टय

४.  
 गी.  
 ७.  
 ७०



॥ ७ ॥ श्रीरुद्रावाचनम् ॥ ॐ  
रुद्राय नमः ॥ यदुदंशीयमाना  
यवदृभिदिउकभृया ॥ ० ॥  
रुद्रविदः भुगालुपुठवंशम  
ददयः ॥ रुद्रभासिदिदिवा  
रुद्रमददीलुंमभवमः ॥ ७  
येभामणभरादिंमवेदिले  
कभदेसुगभा ॥ रुद्रमप्रदः ॥  
भुद्रुभचपापैः ॥ ५ ॥ ७

वृद्धिः नमः भेदेः कथा म  
 दुःखमः ममः ॥ सुपिदुःपिठ  
 वैठ वैठ यं गुरुयमेवम ॥ ८  
 अदिं भा ममता दुष्टि सुपिदु  
 नयमेयमः ॥ ठ वति ठ वकु  
 उयं भदुमवध सुविण  
 ५ ॥ भदुयः मपुत्र चेमद  
 रेम च सुषा ॥ भदुव भा म  
 सतापं लेक उभाः पूर ॥ ७  
 मं विरुपिं यं ममयेवेदि

ठ.  
 गी.  
 ८.  
 ७३



उड्डुः भविकमरयेगेरय  
एउताइभंमयः॥१॥ चणंभ  
चभृप्रठवेभडःभवंप्रवउउ  
उडिभइठएउभंवणठव  
भभविडः॥३॥ भसिडभम  
उप्रा॥७॥ वेणयउःपरमर  
भा॥ कषयउडभंनिडुंउष्ट  
विमभभडिस॥७॥ उधंभड  
उयउंनंठएउंभीडिप्रव  
कभा॥ ममभिवडिडिगेगंउंय

नमः भगवते ॥ ० ॥ उवाच  
 वाचक भगवन् नमो भगवते  
 नमः ॥ नमो भगवते नमो भगवते  
 नमो भगवते नमो भगवते ॥ ० ॥  
 उवाच ॥ परं ब्रह्म परं नमो भगवते  
 विष्णु परं नमो भगवते ॥ परं नमो  
 भगवते नमो भगवते नमो भगवते  
 विष्णु ॥ ० ॥ परं नमो भगवते  
 यः भगवते नमो भगवते नमो भगवते  
 नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते

न  
 गी.  
 न.  
 ०३



वव्वीभि ॥ ०३ ॥ भवमेत  
मउंभट्टयचं वरमि केमव  
नजिउरुग वव्वुजिं विपुट्टव  
नररवाः ॥ ०४ ॥ भुयमेवाइ  
राइरेवउंइपुमपेडम ॥ कु  
अवररुउममेववणग  
इउ ॥ ०५ ॥ वव्वुमदभुमेपे  
मिवाइइविइउयः ॥ याठि  
विइउठि लेक निभं भुव्वु  
उिभुभि ॥ ०६ ॥ कपेविइमजं

ऐगिं भुं भूमपरिमितुयरा  
 के भुकिभूमठवेभुमिनेमिठ  
 गवमया ॥०१॥ विभुगो॥०२॥  
 नैयेगंविदुडिंमएराइन ॥  
 कुयः कषयइप्रिदिमभ ॥  
 उरासिभभउभा ॥०३॥ गीठ  
 गवानवाय ॥०४॥ दउउकषयि  
 भामिदिवाहुहु विदुडयः  
 भूणउउः ऊरुमभूराभुने  
 विभुगभूमे ॥०५॥ पदभाई

ठ.  
 गी.  
 म.  
 ७५



गुह्यकमभवद्गुह्यमयस्मिन्  
अहमादिभूमिंमद्गुह्यं  
भक्तुमवम॥३॥ सुदिदृशम  
दंविष्णुल्लेखिधंरविं सुभा  
न॥ भगीमिद्रुडभस्मिन्  
कद्गुह्यमहंमसी॥३०॥ व  
मंमभवेदेष्टिदेवना  
भस्मिन्भवः॥ उद्युयां  
भक्तुमिद्रुडभस्मिन्  
न॥३३॥ मद्गुह्यमद्गुह्यं

भिदिउमैयदरदसं॥ वभुरं  
 पावकज्ञाभिमेरुःसिपति  
 ॥ ७७॥ भदभा॥ ३३॥ पूरेभं  
 मभ्राष्टंभाविद्विपाऊवद  
 स्यतिभर॥ मेरुगीरभजंभु  
 दःसरभाभभिभागरः॥  
 ३८॥ भददीलंहुगुरंनि  
 गभभूकभदरं॥ यष्टुरंण  
 पयष्टेभिभुवरांदि  
 भालयः॥ ३५॥ प्रसुक्तःभव

ठ.

गी.

द.

७५



ददलं देवदीलं सरागदः  
गत्रुवालं सिद्धरघः सिद्ध  
नंकपिलेधुनिः ॥ ३१ ॥ उच्चैः  
मृवमभसुनां विद्धिभाभ  
भउडुवभा ॥ तेरावउंगले  
दुलं रागलं सरागिधम  
३१ ॥ उच्चैराभदं वदं पेत्र  
राभमिदकं भपकं ॥ पूण  
सुमिदकदः मदलं म  
मिदवभुकिः ॥ ३३ ॥ परउच्च

भिरागां वरुणिषाद्भा  
 मरुभा ॥ पिष्टुं भद्रभासा  
 भिरयमः संयमडा भद्रभा  
 ३७ ॥ पूष्टुं भद्रभिद्रैष्टुं  
 कलंकलयडा भद्रभा ॥ भ  
 गां सभगेष्टुं वैरडेय  
 सुपदि ॥ ३ ॥ पवनः  
 पवडा भद्रिगमः सभुष्टु  
 भद्रभा ॥ गणधालं भक्त  
 सुभिभूडा भद्रिष्टुवे

३.  
 ३.  
 ३.  
 ३.



३० मन्त्रालयभद्रिउत्तम  
पुंमैवाजभल्लर॥ प्रष्टुवि  
द्विष्टुचंवायः पूर्वमम  
दभा॥ ३३॥ पदगालभक  
वेमिष्टुः माभासिकभुम  
पुनमेवाद्यः कलेणउ  
दंविष्टुभेभापः॥ ३३॥ भुः  
भवजगजभद्रवम  
विष्टुभा॥ कीतिः श्रीवाक्  
गरीलभद्रिष्टुपदतिः

भा॥ ॐ॥ वदद्भुतमाभां  
 गायत्रीमुद्रमाभा॥ भा॥  
 आरांभाजमीद्वेदभुतां  
 भुमाकरः॥ ३५॥ भवामां  
 मसदीरांमहेदं पाशुरा  
 पपीरांयवस्राभिण्डु  
 नभसिक्कादुरभा॥ ३६॥ इ  
 उंमुलयडभभिः एणमुण  
 भिराभदभा॥ एणैभिः व  
 आयैभिः भुंभुवडाभा

न.  
 गो.  
 म.  
 ॐ



भा ३१ दृष्टी संवाच्ये वै  
स्मिधा ५ वा संराह्यः ॥  
भरीरामपुत्रं दृष्टमः कवी  
रामपुत्रः कविः ॥ ३३ ॥ दृष्ट  
ममयतामस्मिन्नीतिरस्मिन्  
लिगीधता ॥ भो रं मेवामि  
यह संल्लं रंल्लं रंल्लं रंल्लं  
३७ ॥ यज्ञाधिभवकुडरां वी  
लंडमममल्लर ॥ ३८ ॥ भिवि  
नयमृमयकुडं मरमरभा

१. न त्रेभिर्ममदिवां विह  
 जीनं परत्रय ॥ पथदुर्ममः  
 प्रेते विहृती विभुमेय ॥ २०  
 यदृष्टिदुर्ममः दुर्ममः  
 लिउमेवव ॥ उदुर्मवगमु  
 दुर्ममः उमेममभुवम ॥ २१  
 ममववदुर्ममः किं हृते  
 उवदुर्ममः विहृदुर्ममः  
 दुर्ममः किं ममभुते एगउ  
 २३ ॥ उदिमीठगवदुर्ममः

४.  
 गो.  
 म.  
 ५३



पनिधुवुक्रविष्टयोंयोग  
ममृमीदधुल्लरभंराम  
विद्रुडियेगैरभममभेष्ट  
यः॥०॥चल्लरउवाम॥  
मंभद्रगुदयपरभंशुद्र  
मष्टाद्रमंल्लिउभा॥यद्र  
येऊंवरमभेरभेदेयंविग  
उभम॥०॥रुवाधुयेदिद्र  
उरंमूडेविभुरमिभया॥  
इडःकमलपद्रुदभाजद्र

भविष्यवृत्तभा॥३॥ प्रवमे  
 उदृष्टा उदृष्ट भावदं पंगमसु  
 दुष्प्रभिसुभितुपमे सुगंध  
 नधेडुम॥३॥ भवमेयमिड  
 सुद्धं भयादुष्प्रभितुपमे॥  
 योगसुगंधमेडुमसुयान्द  
 भववृत्तभा॥४॥ मीठगवाउव  
 म॥ पसुमेपाऊऊपातिम  
 उमेवमदभूमः॥५॥ नारा  
 विष्णुविमिष्टानि नारावल्ल

४.  
 गी.  
 ५९



कडीविम॥५॥ पशुमिष्टव  
 अरुद्रवसिनेभरुउसुषा  
 वरुद्रमधुप्रवालिपशु  
 सुदालिभरु॥७॥ उदैक  
 भुणगहं पशुमममग  
 मगभ॥ भममेदेगुमकेम  
 यज्ञाउमधुमिषुमि॥१॥ न  
 इभंमहममधुमभेरेवम  
 मदध॥ मिहंममभिउम  
 दः पशुमेयेगमेषुगभ॥ उ

भणाय उवाच ॥ एव भक्तु उडे  
गण रुद्र ये गे सु रे निः ॥ मन्त्र  
या भा भय जय पर भं कु प भै सु  
रभा ॥ ७ ॥ प्र रे क व क्त र य र भ  
ने क सु उ म न्न र भा ॥ प्र रे क मि  
ष्टा रु र भं मिष्ट रे के सु उ य उ  
भा ॥ ८ ॥ मिष्ट भाला भु र उ रं  
मिष्ट ग न्न न ल प र भा ॥ भ च  
सु द भ यं दे र भ र नुं वि सु उं भ  
पभा ॥ ९ ॥ मिष्टि भु द भ र



भूभृत्वेदुगपदुक्तिः यदि  
ठः भद्रमीभाभुदुभभुभृ  
भद्रद्वरः ॥०३॥ उदैकमुं ए।  
गदुदुं प्रविठु भद्रकण ॥  
प्रपष्टुद्वेवभुमरीरथा  
द्ववभुद ॥०३॥ उदै भद्रिभ  
याविष्टेदुभुं भाठरादुपः  
पुमभुमिगभादेवंठुदुदु  
लिगठधउ ॥०८॥ प्रलुनउ  
वाम ॥ पष्टुभिदेवंभुवद

वसैदेभवं सुषाहुउविसेध  
 भद्रन॥॥॥भीमं कभ  
 लाभरभुभंधीसुभचत्र  
 रगांसुमिष्टार॥०५॥चुरेक  
 ठरुमरवक्रनेशुमृभिदं  
 भवउेननुद्रुपभा॥॥॥ननुंरभा  
 पुंरपुनसुवादिंधमुभिवि  
 सुसुगविमुद्रुपभा॥०६॥किरी  
 टिरेगदिनेमद्रिमेमउेणे  
 रमिंभवउेमीधुभनुभा॥॥

४.  
 गी.  
 १०.  
 १०



पशुभिर्दुःखत्रिगीहं समभु  
द्वीपारलकृद्विभयमेव  
भा॥०१॥ इमद्वयं परमं वेदि  
उद्वं इमं विष्णुपदं निणर  
भा॥ इमद्वयः साधुतामगो  
प्राप्तता उरुं पदं मे उमे॥  
०३॥ पशुभिर्दुःखत्रिगीहं  
दमरुतं रक्तं समिधं तै  
भा॥ पशुभिर्दुःखत्रिगीहं  
वक्तुं भुञ्जतां विष्णुभिर्दुःख

पत्रभा ०७ सुवापयिर्वैरि  
 मभतुगंदिवापुंड्रयेकैरमिम  
 सुमवाः ॥ सुभु'कु'उं'कु'पभगं  
 उवेमंलेकइयंप्रविष्टुंभद  
 द्वा ॥ ३ ॥ प्रभीदिहंभरभं  
 थाविमत्रिकेसिमूडः प्रा  
 ल्लयेगलत्रि ॥ सुभ्रीइकु  
 भददिभिदुमंथाः सुवत्रि  
 हं सुत्रिभिः पुष्कलाभिः ॥ ३०  
 रुद्रमिद्वचमंवेयमभाष्टा

ठ.  
 गी.  
 स.  
 १३



विश्वसिरोभरुत्तुधपाशु  
गवचयदभगभिद्रुमंभा  
वीकतेहुंविभिद्रुमेवभव  
३३॥ उपंभद्रुवद्रुवद्रुव  
भद्रुवद्रुवद्रुवद्रुवद्रुव  
भा॥ वद्रुवद्रुवद्रुवद्रुव  
लंरुद्रुलोकः पृष्ठविद्रुव  
षाद्रुभा॥ ३३॥ वद्रुवद्रुव  
पुमनेकवलंद्रुवद्रुव  
विमालनेद्रुभा॥ रुद्रुवद्रुव

पूरुषिडउगद्गपडिंरविद्ग  
 भिमभंयविष्णे॥३॥संभू॥  
 कगलानिमउभापनिमधु  
 वकलानलभविठनि॥मि  
 मेरएरलठममद्गपूभी  
 मदेवेमणगत्रिवाभ॥३५  
 पभीमहुंएउगधुधुपडः  
 भवेभदेवावनिपास्तम  
 डः॥कीर्धेदे॥मःमुउपइभु  
 षासोभदभमीयेरधिये

ठ.  
 गी.  
 ए.  
 १३



ॐ भूतैः ॥ ३१ ॥ वक्रुमिउदु  
भा ॥ विमत्रिमं भूकग  
ला निठया निक्कि ॥ केमि  
दिलग्रममरात्रुमभरु  
मुत्रुमलिउमडुभाङ्गैः ॥ ३२ ॥  
यषा नमीरां चरुवेभुवेगाः  
मभमूमेवादिभापादुवत्रि  
उषाउवाभीरलेकवीग  
विमत्रिवक्रुमिउदुल  
त्रि ॥ ३३ ॥ यषाभूमीपुंल

नंपउल्लुविमतिरामायभभ  
 दुवेगाः उषेवनामायवि  
 मतिरेकभुवापिवक्ता  
 लिभभदुवेगाः ॥ ३७ ॥ ल  
 लिहमेगभभानः भभता  
 लेकभभगवदनेल्ल  
 दिः उणेठिगपुदणग  
 भगंठभभवेगाः पुउपति  
 विष्णु ३. पाणदिभेके  
 ठवउगुपेभेभुउरेवव

४.  
 गी.  
 १४.  
 १४



गुभीर ॥ विष्णु उभिष्णुभिठ  
वतुभाहंरदिप्रसरभिउव  
प्रवडिभा ॥ ३० ॥ श्रीरुगवा  
ववम ॥ कुलेभिर्लेकदा  
यदप्रवडलेकप्रभाजड  
भिजप्रवडः ॥ दउपिडरठ  
विष्टुभिचयेवभिडः प्रह  
रीकेषुंयेणः ॥ ३१ ॥ उम्रडुम  
डिभूयमेलठभुणिडमह  
कुहंरगुंभभडुभा ॥ भये

वैदेविदः प्रचमवरिभिदुभाइ  
 ठवभट्टभामिना ॥ ३३ ॥ द्वांम  
 ठीधंमणयदूधंमकल्लंउषा  
 ठारपियेठवीगरा ॥ भयाजं  
 भुंणदिभाट्टविधुयट्टभुण्ड  
 भिगल्लभपट्टारा ॥ ३४ ॥ मगल्ल  
 पउवाय ॥ मउभुइवमरंकेम  
 वभुदडाडुल्लिचैयभानःकि  
 गीली ॥ नभभुइडुयापवाजद  
 ल्लंमगल्लमंठीउठीउःपुल्लभु

ठ.  
 गी.  
 म.  
 १५



ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥  
 कर्मवत्कीदृशगच्छच्छुद्ध  
 नृणां तेषां ॥ गच्छन्ति मीमांसि  
 मूढा विभवेन भवन्ति ममिदम्  
 ॥ ३० ॥ कर्मवत्तु नृणां मम  
 ददन्तु गीयमानं वक्तुं विदुः  
 ॥ ३१ ॥ नृणां तेषां मम  
 भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं ॥ ३२ ॥  
 इति श्रीमद्भगवद्गीतायां  
 अष्टादशोऽध्यायः ॥

भिवदुंमपरंमणभइयाउंविष  
 भनउउप॥३३॥वायदंभेगिवा  
 नानःसमादुःप्रएयडिभुंप्रपि  
 उभदु॥नभैरभसुभुमदसु  
 दइःपुनसुकुयेपिनभैरभसु  
 ३७॥नभःपुनसुदवपुधुउभु  
 नभैसुउभचउपवमच॥पनउ  
 वीदामिउविउभभुंमचंमभा  
 प्रेपिउंउधिमचः॥८॥भापडि  
 भइ'पुमठंयदुंऊंऊंऊंऊंऊं

क.  
 गी.  
 प.  
 १०



दधजभापा३॥ नएवडा  
भानतुवेदंभकाप्रभाप्रदु  
यैवपि॥ २०॥ यज्ञावदभा  
ऊभमहुँउमिविदगमष्टभर  
ऊएनेध॥ एकैषवाप्रमुउउ  
इमकंउऊभयइमदुमप्रम  
यभा॥ २३॥ पिउभुलकभुम  
गममभुइमभुप्रएप्रगुनन  
गीयान॥ नइइभैभुहणिकः  
ऊँउँलैकइयधुप्रिभप्रठ।

वः ॥ २३ ॥ उभयं दुःखं भूषण  
 यकं यं भूषणं यं भूषणं भीम  
 भीमं ॥ पिउवपुशुभाप  
 वभापुः प्रियः प्रियायादभि  
 देवभैरव ॥ २४ ॥ वदपुष  
 चंद्रपिंडिभिदुष्टुठयैरम  
 प्रुषिंभैरमे ॥ २५ ॥ वभमज्ञ  
 यद्वैरुपंभूमीद्वैरमणग  
 विवास ॥ २६ ॥ किरीटिंरगदि  
 रंमरुदभुभिदुष्टुभिदुष्टुभ

ठ.  
 गी.  
 म.  
 ११



ॐ३धेव॥ उ३व३प॥ म३ड३॥  
ए३म३म३भ३क३डे३ठ३व३वि३स३भ३  
उ॥३॥ श्री३ठ३ग३क३र३वा३म॥  
भ३या३प३म३त्रे३र३वा३ल्ले३गे३र३ं३ड३प३  
र३ं३सि३भ३ड३ये३गा३उ॥३॥ उ॥  
भ३यं३वि३स३भ३न३भ३ड३ं३य३मे३ड३॥  
म३र३र३म३पू३प्र३च३भ॥३॥ ३॥  
वे३म३य३ल्ल३य३र३र३र३र३म३रि३  
या३नि३उ३पे३नि३म३गैः॥३॥ स३वं३ड३  
पः३म३ह३म३जं३र३ले३क३म३ं३ड३॥

रुद्रैरुक्तसुपुवीर॥८३॥ भाइय।  
कामाविभुक्तवैरुक्तुपु  
थैरभीरुद्रभैरुभा॥८४॥  
रीःपुत्रभक्तःपरपुत्रदेवभक्त  
पभिमंप्रथमु॥८५॥

उवाच॥८६॥ लुप्तं वा भुक्तं वधु  
षेकुभुक्तं पुत्रं यथाभाभक्त  
य॥ पञ्चाभयाभाभक्तगीतम  
रं कुद्रुपुत्रः सीधुवधुददद  
प॥८७॥ पुत्ररुवाच॥ रुद्रैरुक्तं

क.  
गी.  
स.  
१३



भात्रधं कुपं उवमो भृण राद्र न ॥  
उदगी भभिद संवदुः भसतः  
पुद डिंगतः ॥ ५० ॥ श्री ठग वा  
वदाम ॥ भुद रुच भिमं कुपं द  
धुवार मिधम ॥ देवा पृष्ट  
भुद पभु रिदं च कदि ॥ ५१ ॥  
रादं वेदै उध सा रद रर मे  
एय ॥ मरुत वं विदे म्भुं द  
धुवार मिभां यषा ॥ ५३ ॥ ठग  
दरतु या मरु पद भवं विरेल

क. गी. प. १७



मुं पदुपामउ ॥ येमपृ कुर  
भवकुं उधं के येग विदुभा  
० ॥ श्रीरामवचनम ॥ भव  
वसुभने येमं विदुयकुं उधम  
उ ॥ मरुयापरयेपउं मुभय  
कुं उधमउः ॥ ७ ॥ येदुकरम  
विदुमुभवकुं पदुपामउ ॥ म  
चरुगममिनुं मकुं उधमलं  
पुवम ॥ ७ ॥ मत्रियमुदियग  
मंभवउमभवदुयः ॥ उधपु

वतिभामेवमचक्रुः३जिउः३ः॥  
 २॥ लैमैणिकः३मुपाभट्टः  
 मउमैः३भाभा॥ पट्टः३जिगा  
 डिदः॥ पं३दवदिः३चपुः३॥ ५  
 यइमचालिकः३लिभयिभ  
 चुपुभदः॥ ॥ पः३तुः३वैवैग  
 नभां३पयउउपाभउ॥ ६॥ उपा  
 भं३मभदुः३भदुः३मं३भा३भा  
 गगडा॥ ठवाभिः३मिगदुः३  
 भपुः३वमिः३मं३भाभा॥ ७॥ भ

ठ.  
 गी.  
 इ.  
 उ.



सुवभरप्र०५ भयिबुद्धिरेव  
मय विदमिष्टमिष्टवप्रउ  
ऊर्वंभंसयः॥३॥ चषमिदुम  
भाणदुंरमकेधिभयिभिरभा  
प्रहभयेगैरउडेभमिष्ठापुं  
पराङ्मुख॥७॥ प्रहभेष्टमम  
ऊमिमङ्गपरभेठव॥भम  
ऊमधिकदमिऊवमिदि  
भवप्रुमि॥०॥ चषैउमपु  
मऊमिक्ऊमपुगभामिउः

४.  
गी.  
इ.  
३०



भद्रकः भद्रपुत्रः ॥ ०८ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ ०९ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १० ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ ११ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १२ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १३ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १४ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १५ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १६ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १७ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १८ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ १९ ॥ य  
भद्रपुत्रः भद्रपुत्रः ॥ २० ॥ य

三



वज्रं च ध्यायेत्तु बुद्धिः  
 कृपया योगमश्नुते कथं  
 न संवादे कृति योगे न भवति  
 ममिष्टायः ॥ ०३ ॥ चतुर्दश  
 वारं ॥ तैपुलतिं प्रमथं मेव  
 देहं देहं मेव मम ॥ १३ ॥ इति  
 दुर्मिष्टं मिष्टं लोभं मम मेवः  
 ० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ  
 मरीचं च त्रयं देहं मिष्टं चिपी  
 यतः ॥ १३ ॥ देहं चिपी देहं

लुभितिउदिमः॥३॥ कइल्लम  
 पिभाविदिभबदइधुठ॥३॥  
 कइकइल्लयेल्लुंयउल्लुंभउं  
 भम॥३॥ उहेइयल्लयाम्ज  
 यदिकरियउल्लयउ॥भमये  
 यदुठवल्लउल्लभाभेयमेम  
 म॥उधिरिउल्लगीउंमुंहेहि  
 चिचिपैः॥यषक॥वृमभइय  
 मेमुंवजउभदुचिचिदिउः॥  
 ॥भदइउउल्लुंवेदिउल्लुं

क.  
 गी.  
 इ.  
 उउ



भेवम उद्दि यामि मसैकं स  
थं स मे दिय गे मरः ७ उमु  
इधः भुपिंदः अपे म ह्यु उ म्ने उ  
पतिः ॥ स उ ह्ये डूं म म भै र भ वि  
क र भ म ह्यु उ म ॥ १ ॥ स भ रि  
इ म सं वि डूं म जिं म क वि ग ल  
व म ॥ पु म दे प म रं मी सं भु  
द म ह्यु वि रि गू दः ॥ ३ ॥ उद्दि य  
ऊ ध वे ग गृ म र द ह्यु ग र व स  
ए म म ह्यु ए ग वृ पि दः ए मे

धारुमचरभा ७ ॥ सुभक्तिर  
 तिष्ठतः प्रहस्यगदमिधु ॥ रि  
 दं सभममिदुहमिधुः विष्टे  
 पडिधु ॥ ०० ॥ भयिस्तनवृष्टे  
 गनरुक्तिरवृष्टिमारि ॥ ॥  
 विविक्तमेसमेविदुभरति ।  
 लरभंभमि ॥ ०० ॥ पष्टमरु  
 वरिष्टुदंउदुष्टुनाऊमचरभा  
 मउष्टुमभिरिष्टुमरुष्टुयम  
 उष्टुष्टु ॥ ०० ॥ लुष्टुयउष्टुवष्टु

ठ.  
 गी.  
 उ.  
 उम



मियद्दुहुभउममुउ ॥ चरामि  
मयरेचुकरमउत्रममुमुउ  
०३ ॥ मचउः पालिपांउरु  
चउदिमिरेभयभा ॥ मचउः  
मुडिभल्लेकेभवभावउडिधु  
डि ॥ ०४ ॥ मचेदियगुल्लुभं  
मचेदियविवल्लितभा ॥ पुम  
जंमचहुसुवनिनुं गुल्लु  
हुम ॥ ०५ ॥ वजिरउसुहुउं  
भयंमभेवम ॥ मुकुहुउम

विल्लेयं सुरभुंसात्रिके सउर  
 ००॥ चविठकुं सकुउधविठकु  
 भिवसंभुिउभा॥ कुउठकु सउ  
 ह्यं गृभिपुपुठविपुम॥ ०१  
 ह्यिधभपिउल्लेडिभुभमः  
 पभमुउ ह्यंल्लेयंल्लरगभुं  
 ह्यिभचभुविधिउभा॥ ०३॥  
 उडिदेइउषा ह्यंल्लेयंमेकुं  
 मभामउः॥ भमुकुपउडिह  
 यभमुवयेपपहुउ॥ ०७॥ ५६

ठ.  
 जी.  
 ३.  
 उध



डिंपुस्येमेव विदुः मी उठव  
पि विक'गं सुगुं मेव विदि  
प्रतिमभुवारा ॥३॥ क'दक  
राम कड्डु डेडुः प्रतिमभुव  
पुनधः भापदः पागं ठेकुडु  
डेडुमभुव ॥३॥ पुनधः प्रति  
डिमुदिडु डेडु प्रतिमभुव  
क'गं गुममभुमभुमभु  
निगमभु ॥३॥ उपदुष्टमभु  
उमठडु ठेकुमभुवः पाग

द्वेतिमाधुजैद्वेदमिदुनधःप  
 २: ३३ याववेदिप्रनधंप्रन  
 तिमनुजैःमज॥भववावतुभा  
 नैधिरभकुपेठिसय॥३४॥प्रा  
 नैरानिधिसुत्रिकमिदमभा  
 द्मन॥सुत्रभाह्वैरयेगैरकमये  
 गैरमाप॥३५॥सुत्रैवमसरा  
 तःसुत्रैवमभाभ॥३६॥उधिसा  
 तित्तैवमभासुत्रिधरायाः  
 ३७ यावत्तैवकिन्निदु

ठ.  
 गी.  
 ३३



शुभगणान्मभा॥ ६३६३६  
मंयोगाडुडिडि ८३३८ ३१  
ममंमवपुडुडिडि ३३३३  
सुभा॥ विरपुडु विरपुडु यः  
पपुडिमपपुडि॥ ३३॥ ममंपपु  
दिमव३ममवसिडुभीसुभा  
नदिरभुडुनदुनंउडिडिप  
गंगडिभा॥ ३३॥ पपुडिडिप  
मलिडिडिभागमिवमः॥  
यःपपुडिडिपदुनमकडुनंम

पशुति ॥ ३० ॥ यमकुडपषगु  
 वमकभुभत्रपशुति ॥ उडसव  
 मविभुगं वृक्षमभपुडुडम  
 ३० ॥ यममिद्विनु ॥ वृक्ष  
 भादयमवृयः ॥ मगीरभुधि  
 केयरकरोडिरलिष्ट ॥ ३३ ॥  
 यषामचगउंभीकुमकमंने  
 पलिष्ट ॥ मचइवभुडुडेन  
 उषाद्वनेपलिष्ट ॥ ३३ ॥ यषा  
 प्रकमयडकः रुडुं लेकभिमं

क.  
 गी.  
 इ.  
 ३१



रविः ॥ कंडूकंडू ॥ ३५ ॥ कंडू ॥  
कमयतिष्ठ ॥ ३५ ॥ कंडू ॥  
ल्लोपेवमत्रं ॥ ३५ ॥ कंडू ॥  
कुंडू ॥ ३५ ॥ कंडू ॥  
विउपरभा ॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
वन्नीत ॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
यं येगसा ॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
वाम ॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
राम ॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
॥ ३५ ॥ ३५ ॥  
॥ ३५ ॥ ३५ ॥

प्रवहामि ह्यगं ह्यमभुमभा  
 यद्भुवभुवः भवेयं मिद्विनि  
 उगडः ॥ ० ॥ उमं ह्यमभुपामिद्वि  
 भमभा उमभा गडः ॥ भजेयिरे  
 पस्यते पुलयेरवृषतिम ॥ ३  
 भमये निमद्विद्विद्विद्विद्विद्वि  
 द्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्वि  
 नं उउठवडिठउउ ॥ ३ ॥ भवेयं  
 विधुकेतुयभुवः भुववि  
 याः ॥ उमं वृद्धमद्विद्विद्विद्वि

ठ.  
 गो.  
 मं.  
 उउ



वीणपदःपिडा ॥ ४ ॥ मंडुगण  
सुमंडिगुणःपदतिमकु  
वाः॥ निरप्रतिभजवदेद  
दमेदिनमवृयभा ॥ ५ ॥ उम  
दुनिमलहृदु कमकभरभा  
यभा ॥ भापमज्ञरप्रडिहुर  
मज्ञरमावथ ॥ ६ ॥ गणिगगा  
इकंविदिहृदु मज्ञमभुदु  
वभा ॥ उत्रिप्रडिकैतेयकम  
मंगरमेदिनभा ॥ ७ ॥ उमभुदु

२९॥ विद्धि मे देवं भवदेति राभा  
 प्रभादलभुनिदृढिभुत्रिद्वारा  
 डिठरउ॥ ३॥ भुंभुपिभाह्लयति  
 गणः कदलिठरउ॥ हुरभाच  
 हुडउभः प्रभादेभंणयडुउ॥ ७  
 गणभुभञ्जठिद्वयभुंठवति  
 ठरउ॥ गणः भुंउभञ्जैवउभः  
 भुंउगणभुषा॥ १०॥ भवद्वि  
 भुदेभिद्वकमउपस्यउ  
 हुरंयमउमविद्विद्वद्वंभा

ठ.  
 गी.  
 सं.  
 ३७



इमिइउ ०० लीठः पूरुडिग  
रभुः कम् ॥ भममः भुद  
रणमुडारिएयउविक्कुठर  
उदर ॥ ०१ ॥ मपूक'मैपूकडि  
सुपूम'मैमैजपवम ॥ उममु  
डारिएयउविक्कुऊरुमरु  
०३ ॥ यमम'मुपूक'मुपूक'मुपूक'  
यंयाडिमैजहुड ॥ उमैडुमवि  
मंलीक'रभला'मुडिपहुड  
०५ ॥ गणमिपूलयंमड'कम्

भद्रिधुस्यते उवाधुलीरभुम  
 मित्ररुयैनिधुस्यते ॥०५॥ क  
 मलः भुदुभुदुः भद्रिकं नि  
 दलं दलभा ॥ गणसमुदलं  
 दुःपमल्लुनं भमः दलभा  
 ०॥ भद्रुं रयते लुं गण मे  
 लेठारवस ॥ धुमादु मेदे भमे  
 रुवेते लु मेवस ॥०१॥ उचं ग  
 सुतिभद्रुभुमष्टिधुतिगण  
 सः ॥ एधुदुगलं वदुभुदु

कः  
 गोः  
 धुः  
 उः



पोगुडिभमः॥०३॥ रातुं  
लिहः कडुं यमदुष्टात्रपदु  
डि॥ गुल्लहृष्टपुं वेडिभदुवं  
गिगमुडि॥०७॥ गुल्लवेडात्रडी  
इडीचंदीमेदमभदुवारा ए  
दभदुएगदुः पौचिभऊं भ  
उमभुडि॥७॥ ॥ गल्लरउवाय ॥  
कैलिहृष्टीनुल्लवेडात्रडीउं  
वडिपूठः॥ किभामारः कषं सै  
डं भूनुल्लरडिवडु ७०॥ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५० ॥  
 ममेकमेवमथाहव ॥ १ ॥ इति  
 पूज्युनिरनिकडुनिकडुति ॥  
 ३३ ॥ अरभीरवरभीरैगुलैदे  
 रविमालुते ॥ गुलवउउउउउ  
 येवडिधुडिनेडुते ॥ ३४ ॥ भममः  
 लभापः भुभुः भमलेभुमक  
 डुनः ॥ उल्लुपियापियेगीरभु  
 लुनिकडुमंभुडिः ॥ ३५ ॥ भराप  
 भारयेभुलुभुलेभिइरिपदा

५.  
 गी.  
 मं.  
 ७०



येः भवाः भूपरिहृगीगुली  
उः सउष्टे ॥ ३५ ॥ भं मयेष्टे किर  
रालकजियेगसंवडे भगुली  
सुभडी डैड वृऊऊ यायकल  
उ ॥ ३६ ॥ वृऊलेदिधुडिधुदभ  
भउष्ट वृयभुम ॥ सउष्टभुम  
पदभुभापभुकेडिकभुम ॥ ३७  
उडिमीठगवल्लीड भूपरिधु  
वृऊविष्टयं येगमाभुमीठ  
भुलभंवादेगुलीउयविरु

मधुगिरिभूमिदुर्गमष्टायः ॥ ०२

श्रीकृष्णवचनम् ॥ ॐ कुरु भूल

भूतः सायम्भुक्तुं प्रदुर्गव्य

भा ॥ सुदंभियमुपलनियं

वदभवेदविड ॥ ० ॥ ॐ श्रेष्ठं

प्रभुतामुमुसायगुलप्रव

कृविषयप्रवलाः ॥ ॐ सुभल

दुवभुक्तुनिकद्वरवनीनिभ

उष्टलेक ॥ ३ ॥ ननुप्रभुजड

वेधलकडगतेरमादित्रमभं

क.  
गी.  
पं.  
७३



पुडिष्ठा ॥ चसुत्तुमेरंमुचिदुक्कभ  
लभमङ्गमसुत्तुमृक्कैरसिद्धि  
३३३ः पमंउद्गिभानिउद्गय  
सिद्धिउरविचुत्तिदुयः ॥ उम  
वमंउद्गपुनधंपुद्गयः ॥ पुव  
दिः पुमउद्गपुगली ॥ म ॥ रिम  
मिमेदलिउमङ्गमिधपुद्ग  
विद्विचिउकभाः ॥ सुद्गि  
भुङ्गः सुत्तुमः पमंउद्गपु  
भुङ्गः पमभुद्गयंउद्ग ॥ ५ ॥ ३३

ऋभयउभुदेरससाङ्गेपावकः  
 यङ्गहरनिवउतेउङ्गभयरभं  
 भभ०॥ भभैवंमैणीवलेक  
 एविङ्गउःभराउरः॥ भनःधभ  
 निद्रियालिपुहडिभुनिक  
 छडि॥१॥ मगीरंयमवधेडिघ  
 स्वाभुभडीभुरः॥ गनीडेड  
 निभंयाडिकायुजत्रुनिकाम  
 याड॥३॥ मुङ्गमदःभननंम  
 रभरंभालभैवम॥ यणिभ

३.  
 गी.  
 पं.  
 ७३



[illegible]

मा० ०३ गाभाविष्टमकुडविण  
 रघाभुदभोलाभा॥ पल्लुभिरो  
 यणीसदाः भोभेकुडरभादि  
 कः ०३ ॥ पदंवेष्टारैकुड  
 पुलिसंसेदभामिउः ॥ पु० ॥  
 पारमभायुक्तः पमाभुत्रंमड  
 विणभा॥ ०४ ॥ भवभुमादंहुमि  
 भविविष्टेभडुः भुडिस्तुम  
 पेदरंम॥ वेदेष्टुमवेरदमेव  
 वेदेवेमभुक्तंमविदेवमाद

कु.  
 गी.  
 प.  
 ७५



भा ०५ इविमिपुनधेलेक  
करञ्च करसवम करःभव  
लिकुशरिक्कटभेकरउमृउ  
०॥ उडुमः पुनधभुतः परभा  
इरुमरुतः ॥ येलेकइयभावि  
मृविठरुचयगंवरः ॥ ०१ ॥ यभ  
दुगभडीउदमदरादयिमिडुमः  
पडुमि लेकेवेममपुषिडः पु  
मधेडुमः ॥ ०३ ॥ येभभेवमभं  
उमिेराडिपुनधेडुमभा ॥ भ

भवविदुलतिभं भवठवेरठ  
२३ ॥ ०७ ॥ उतिगुरुउभंसाभुभि  
मभुऊंभयवप ॥ १३ ॥ उदुव  
दिभासुदुउरुदुसुठ ॥ ३० ॥

उतिमीठगवनीउअपनिधउ  
मुकविदुयंयैगमायुमीठ  
मुल्लारभंवाउपुमधेउभयैग  
गभभंमममैष्टायः ॥ ०५ ॥

मीठगवाउकम ॥ तैपुठये  
महुभंमुदिज्ञरयेगववसि

ठ.  
गी.  
पं.  
७५



तिः ॥ मरुतमसुयल्लसुभृष्टय  
मुपपुल्लवभा ॥ ० ॥ प्रदिमाभ  
दुभरेष्ठभृगः सात्रिपि सुभ  
मयाकुउपुल्लेल्लभाद्वं स्त्री  
मापलभा ॥ ३ ॥ उणाः दभाय  
तिः सौमभद्वेजतिभारिउ  
ठवतिभभद्वेदेवीभठिसउ  
भुठरउ ॥ ३ ॥ मभुद्वेदिभार  
सुदेष्टः पमभृभेवम ॥ सुद्वे  
माठिसउभुपाऊमंपदभाभु

ॐ  
ग्री.  
च.  
ॐ



सुगर्भा ॥ पपरभद्रमभुत  
किभट्टकभट्टकभा ॥ ३ ॥  
पठं मृष्टिभवधुहुरभ्रम  
नेल्लवद्रुयः ॥ पृष्ठवतुगक  
मलः ॥ कयायणगंडेदिडः  
७ ॥ कभभासिहृदधुरंरुभ  
भारभमविडः ॥ भेदज्ञदी  
इमज्ञदधुवतुवेसुमिडः  
० ॥ मित्रभपरिभेयं सपूल  
यात्राभपमिडः ॥ कभेयं

गपभापडवमिडिगिडिडः ॥

०० सुमापासमडेउड्डकम

रूणपाया॥ रेंडनेकम

डेगाऊमडयेरऊमंसयरा

०३ डडमडुमयालडुमिड

पुपुमभैरवभा ॥ डडमडुम

मपिमरुविपुडिपुनचरभा

०३ ॥ पभैमयाडडःमडुन

विपुमापगत्रपि ॥ रेंडनेकम

डडेगीमिडुं डलवडुपी

ठ.  
गी.  
पं.  
७१



०४ सुमुठि एव वरमिदं ८  
सुभरुमैभया ॥ यद्गुरुभू  
मिमैमिष्ट उट्टु रविमैदि  
उः ॥ ०५ ॥ प्रकमिदुविदुत्रा  
मैल सलमभादुः ॥ धूमजः  
कभैगैधुपउतिरकैसुमै  
०६ ॥ सुदभभुविदः सुदु ०७  
भाभमदुविदः ॥ यएनुगभ  
यल्लैभुमभुगविणिप्रचकभा  
०७ ॥ पदद्वंरल्लैमद्यैकभंरै

गयभापडवमिडिगिडिडः ॥  
 ०० पुसापासमडेउडूकम  
 ०१ पुसापासमडेउडूकम  
 ०२ पुसापासमडेउडूकम  
 ०३ पुसापासमडेउडूकम  
 ०४ पुसापासमडेउडूकम  
 ०५ पुसापासमडेउडूकम  
 ०६ पुसापासमडेउडूकम  
 ०७ पुसापासमडेउडूकम  
 ०८ पुसापासमडेउडूकम  
 ०९ पुसापासमडेउडूकम  
 १० पुसापासमडेउडूकम

८.  
 गी.  
 ७१



०४ पुष्पेठि एव वारमिदं  
सुभम्, मेभया ॥ यद्गुम्भु  
मिमेदिष्ट उद्गुम्भु विमेदि  
उः ॥ ०५ ॥ पुरेक मिदु विद्गुम्भु  
मेठि एलमभा वदः ॥ भुम्भुः  
क'भेठि गेधुम्भु उतिरक'भुम्भु  
०६ ॥ पुद्गुम्भु विदः भुम्भु ०७  
भाभम्भु विदः ॥ यद्गुम्भु  
यद्गुम्भु विदि पुद्गुम्भु  
०८ ॥ पुद्गुम्भु वलं मद्गुम्भु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 धृष्टकेतुर्वृषस्यै नमः ॥ ०३ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ.  
 गी.  
 धे.  
 ७३



भूमिउद्युतलुङ्ग ॥ ३० ॥  
भुजः केतुयडभेदरेभिदित्र।  
२ः ॥ सुमरदुद्धनः मूयभुडेयादि  
पतंगडिभा ॥ ३१ ॥ यः साभुवि।  
विभुद्धवडुडकभकडः ॥  
नभमिदिभवाप्रिडिभुपंथ  
रंगडिभा ॥ ३२ ॥ उभसुभुप  
भातेडकटकटववभुडे ॥  
सुइसाभुविणवेडुंकडकडु  
मिददभि ॥ ३३ ॥

वहीत उपरिधमनुकविह  
 यायेगमामुमीदभुल्लमं  
 वादेदेवाभुमंपडियेगेर  
 मधेममेष्टायः॥ ०० ॥  
 लुगवा म॥ देयेमाभुविणि  
 भद्रुष्टयणउमद्रुष्टयः॥  
 उधंरिभुडकदभुमद्रुभजे  
 एभुमः॥ ०० ॥ मीठगवववा  
 शिविणठवडिमुद्रुमदिनेभा  
 भठवस भाडिकीगणभीमे

क.  
 गी.  
 मधु.  
 ००



वदभभीमेडिउंम॥ ३ म॥  
उदभभचभुमुदुवडिठ॥  
मुदभयेयंभुमेयेयमुदुम  
मवमः॥ ३ ॥ यएउभाडिक॥  
मेवउदुदंभिगएभाः॥ ५  
उदुगालंमुदुयएउभभा  
एभाः॥ ४ ॥ ममाभुविजिउंभे  
उदुयेउयेएभाः॥ मभादुदु  
रभंमुदुःकभागदलावि  
उः॥ ५ ॥ कदुयउःमगीरभुं

उग्रमममोऽभा ॥ भांसेवतुः स।  
 गीमंउविष्टुभयिष्टुयार ॥  
 ॥ पुनरभुपिभवमुदिविपे  
 कवडिप्रियः ॥ यस्तुपुपमुष।  
 मनेउधंठमभिभंस ॥ १ ॥  
 पुषःसदुवलागेष्टुभापपीति  
 विवररः ॥ रभुःभिगुःभिगु  
 रुष्टुपुनरःमादिकप्रियाः  
 ॥ कदुल्ललवलादुल्लुकीकु  
 रुविमदिरः पुनरमरला

क.  
 गी.  
 मउ.  
 ०...



समुद्रः तपसिकं भयपूरः  
७॥ यत्तया भंगः संप्रतिपद  
पिउंम यत् ॥ उच्छिष्टमपि  
मेष्टं ठेलां भमपियम ॥ ०  
मदलक द्विदिल्लिवि  
मृष्टेय उल्लुत् ॥ यधु मवेति  
भरः सभाणय सभादिकः ॥  
००॥ चठि सत्रय डदले  
भुजमपि मेव यत् ॥ उल्लुत्  
ठरुत् मेष्टं यल्लिविद्विगल

सभा ०३ विठ्ठलीरभमधु  
 वंभत्रुलीरभमद्विभाभा ॥ सु  
 ह्विरजिउंयल्लुंभसंपरि।  
 मरुउ ॥ ०३ ॥ देवद्विणगुरुभ  
 ल्लुप्रणंमैसभाल्लवभा ॥ व  
 क्रमदभदिंभासमासीरंउपउ  
 शुउ ॥ ०४ ॥ मरुउगकरंवाहं।  
 मरुंप्रियदिउंमयडा ॥ धाष्ट  
 याहमंमैववाइयंउपउमृ  
 उ ॥ ०५ ॥ भनःपुसादःमैभुइं

ठ.  
 गी.  
 मधु.

०००



भौरभाङ्गविनिगूढः ॥ ठ व मं  
मुद्रिगिहूउकुपेभारमभुमुते  
०२ ॥ मूद्रयापरयाउपुंउपभु  
द्विविणंरैः ॥ मूढलाकद्वि  
ठिद्वैः भाङ्गिकंपरिमूढ  
०१ ॥ मूढं गभा रप्रसक्तंउपे  
भुरमेवयडा ॥ क्रियउउमिद  
प्रेङ्गणमंमलभपूवभा  
०३ ॥ मूढगूढं ॥ मूद्रयेद्य  
मूद्राक्रियउउयः परमुद्रम

राजं वऽडु भमभुमहउभा॥

०७ मउ- मडियमनमीय

उवपकगिल्ल॥ मेमेकलेमा

इमउमनंभाडिकंभुउभा

३॥ यडुपुडुपकं गऊंढल

भदिपुवपुः॥ मीयउमप

गिल्लिपुंउमनं गणसंभुउभा

३॥ पुमेमकलेयमनंभा

इहममीयउ॥ पुमहउभव

हउंउडु भमभुमहउभा ३३

क.  
गी.  
सपु.  
००३



ॐ॥ इति विष्णुः ॥ १ ॥  
 विष्णुः ॥ २ ॥  
 मन्त्रयः ॥ ३ ॥  
 ३३ ॥ ३ ॥  
 मन्त्रयः ॥ ४ ॥  
 नैऋतः ॥ ५ ॥  
 ३४ ॥ ३ ॥  
 यज्ञयः ॥ ६ ॥  
 विष्णुः ॥ ७ ॥  
 दिविः ॥ ८ ॥

वममसिद्धेउद्युष्टुते ॥ धूम  
 सुकमलिउवाभमुक्तः पाऊ  
 युष्टुते ॥ ३० ॥ यल्लुपमिह  
 नमसिद्धिः मसिद्धिमेष्टुते ॥ क  
 दमेवउमजीयंमसिद्धेवदि  
 णीयते ॥ ३१ ॥ प्रमुद्रयाद्रुते  
 रुतेउपसुपुंरुतेमयते ॥ प्र  
 मसिद्धेमुष्टुपाऊरामउष्टुष्टु

उष्टु ॥ ३३ ॥ उष्टुमीठगव  
 उष्टुमीठगव

ठ.  
 जी.  
 भ.  
 ०.३



दृष्टा योगमासुगी लभुः  
वभेवादेतिगुम्बिठ गये  
गिराभमपुष्टमेष्टायः॥ ०१

पुष्टा उवाच॥ त्रैमंशु मभु  
भद्रवदिउडुमिष्टुमिवेदिदु  
भा॥ दृगभुमहधीकमपव  
ल्लमिनिभ्रमर॥ ०॥ श्रीरुग

उवाच॥ कभृगंकद्रांशु  
मंमंशुमंकवयेविष्टः॥ भव  
कद्रलदृगंभृद्रभृगंदिम

६७: ३ हृष्टं मेधवसिदेक  
 कम्पान्द्रनीधि७: यल्ल  
 मरुतः कम्पान्द्रनीधि  
 प० ३ निम्नयं म० म० उ३ हृ  
 गेठ३ उ३ म० म० हृ गेठिपुम  
 धृष्टान्द्रनीधि: म० म० कीडि  
 ३: ॥ ॥ यल्ल म० म० उ३: कम्प  
 १ हृष्टं क० दमेवउ३ ॥ यल्ल म०  
 म० म० उ३ म० वपावरा निमनीधि  
 ७ म० ५ ॥ म० म० उ३ धिउ३ क०

६.  
 गी.  
 म० म०  
 ०. ५



लिभङ्गदृक्कुलविम क  
उवासीतिमेषाऊनिस्त्रिंभ  
भुभभा॥७॥ वियउभुउभं  
हमःकमलिनेपपहुउ भे  
दउभुपविहृगभुभमःप  
विकीडिउः॥१॥ दुःपभिहृव  
यकमकयल्लेमठयाहुए  
उ॥भदहुगएभंहुगेव  
हुगदल्लेठउ॥३॥ कद  
भिहृवयकमवियउंरियउल

१ भङ्गदृष्टलंमेवभङ्गः  
 भाङ्गिकेभः ७ ॥ १५५५  
 मलंकमकुमलरात्रधल्लु  
 दृगीभङ्गभविष्येभगीष्टि  
 संमयः ॥ ० ॥ १६६६  
 मङ्गदृष्टकमङ्गमेधः ॥ य  
 मुकमदलदृगीभङ्गगीष्ट  
 दिपीयते ॥ ०० ॥ १७७७  
 भिसुमदिविठंकमलः दल  
 भा दवदृष्टगितंभेष्टदुभंष्ट

३.  
 गी.  
 ०.५



भिरं कुमिडा ०३ थंमेडविभ  
दरदेकरा विविगेम ।  
भाहेरुडा उथेऊविभिड्ये ।  
भवकमामा ॥ ०३ पणिधु  
नंउवा कडु करालं मथषदि  
पमा ॥ विविग मथप कडु मे  
वमेबाइयाइ ममा ॥ ०४ मरी  
वकडु रेठिदडु मथारु उरः  
टयंवा विपमी उंवा थंमे उउमु  
देउवः ०५ ॥ उइवं मरिकडु र

भाद्रपदं केवलं दुयः पशुदुह  
 उवृद्धिं वमपशुदिदुमतिः  
 ०१ यधुता जंन डेठ वेवृद्धि  
 दधुनलिधुत ॥ जइधिसड  
 भालेक वज विरविठपुत ॥ ०१  
 हं हं यं मरि हं हं हं हं हं  
 हं हं हं हं हं हं हं हं हं  
 विठः कदममदुजः ॥ ०५ ॥ हं हं  
 कदममकडुयडिठेवगुल्लेक  
 उः धेमडगुल्लभाप्रावयषा

क.  
 गी.  
 यधु.  
 ००



वसुधैव कुटुम्बकम् ०१ भवतु  
प्रियैकैकं वसुधैव कुटुम्बकम्  
प्रविशतुं विरक्तं प्रविशतुं विरक्तं  
विश्वामित्रम् ॥ ३ ॥ यत्तु  
ननु यत्तु ननु ननु वाचस्पति  
एव ॥ वेदिसर्वेषु कुटुम्बेषु  
सर्वविद्विगणमभ्यास ॥ ३ ॥  
तुल्यवैक्यं कश्चिद्वैक्यं  
भवेत्तु कम् ॥ यत्तु तुल्यवैक्यं  
यत्तु तुल्यवैक्यं ॥ ३ ॥

नित्यं भद्रं गच्छति भद्रं गच्छति  
 कर्मा सुखं लभेत् भद्रं गच्छति  
 उद्भूतं भद्रं गच्छति ३३ यदुक्तं  
 भद्रं गच्छति भद्रं गच्छति भद्रं  
 नः श्रियते वरुणाया भद्रं गच्छति  
 एतन्मन्त्रं कुरुतां ३४ भद्रं  
 भद्रं यं जिह्मा भद्रं गच्छति  
 धर्मा भद्रं गच्छति भद्रं गच्छति  
 उद्भूतं भद्रं गच्छति ३५ भद्रं गच्छति  
 नन्दं वासी पद्मं गच्छति

४.  
 गी.  
 ४४.



३:॥ मिदुःमिदुःमिविकः॥ क  
दुभादिक उमुउ ३॥ गगी  
कमल लपुपु लुवेदिभा  
इकेसुमिः॥ ददमेक विउः  
कदुगलभः पिकीविउः  
३१॥ मयुक्तः पूठउः सुवः  
म० वैष्टिके लभः॥ विधा  
मीमीउअशीमक दुदुभम  
उमुउ ३३॥ सुठेमेपुउ सुव  
गुलउः दिविठं मुग धुमभा

नमो भगवते वासुदेवाय  
 ३७ भवति मतिवति मक  
 दक देव गायै वतुं मे दं  
 मया वेदिविद्विः भाषा ऊभा  
 द्विकी ॥ ३॥ यथा पद्म भागं  
 मक दं मा क द मे व स ॥ प्रवषा  
 वदु रगतिवद्विः भाषा ऊगए  
 श्री ॥ ३० ॥ मणं पद्म मिडिया  
 भवतु स उभ भा व उ ॥ भवतु वि  
 धी सं व वद्विः भाषा ऊ उभ

३.  
 उती.  
 यष्ट.  
 ००३



श्री ३३ पश्ययथा १ यत्  
भनः प्रालेद्वियसिः ये  
गोरावृत्तिमार्ति १७ पतिः भ  
पञ्जभाटिकी ३३ यथा ३  
पद्मकभाज ३३ यथा ३  
३॥ भूमि १७ लाकट्टी पतिः  
भापञ्जराणी ३३ यथा ३  
प्रेरयं मेकं विधां भद्रमेव ३  
३ विभाट्टि ३३ यथा ३  
पाञ्जराणी ३३ यथा ३

नमो भगवते वासुदेवाय  
 ३७ भुवङ्गि मनिवङ्गि मक  
 दक देठया ठये वंभेदं  
 मया वेडि वङ्गिः भापाऊभा  
 डि की ॥ ३॥ यया ठम भा मं  
 मक देगा क द मे व स ॥ यय  
 वदु सग डि वङ्गिः भापाऊगा  
 भी ॥ ३० ॥ यमं ठम मिडिया  
 भवु स उ म भा व ड ॥ भवाऊ वि  
 धमी डं व वङ्गिः भापाऊ ड म

३.  
 उ ती.  
 यय  
 ०-३



भी ३३ पश्ययथा १ वड  
भनः प्रालिप्ययिष्यः ये  
गोरावृद्धिमात्रि १०० पडिः भ  
पञ्जभाटुकी ३३ यथा ३  
पद्मकभाजवृद्धि १०० पडिः  
१॥ प्रमद्विपदलाकक्षी पडिः  
भापङ्गणसी ३४ यथा ४  
प्रेरयं मेकं विधातं भद्रमेवम  
त्रिविभाटुदिद्वे १०० पडिः भ  
पाङ्गणभसी ३५ भापंदि

नमो भगवते वासुदेवाय  
 ३७ भुवःपुत्रं भवःपुत्रं भवः  
 दकदेव्याय नमः ॥ ३८ ॥  
 मया वेदिवृद्धिः साधाऊ मा  
 दिक्की ॥ ३९ ॥ यथा पद्म भण्डं  
 मकंदं कंदमवसा ॥ यथा  
 वदुसा विवृद्धिः साधाऊ मा  
 भी ॥ ४० ॥ यथा पद्म भण्डं  
 भवःपुत्रं भवःपुत्रं भवः  
 यमीशं भवःपुत्रं भवः

३.  
 उती.  
 यथा.  
 ०.३



[illegible]

मनीशिविठंम १५ मेठ १३६  
 ४ पृष्ठभासुभउयइमत्ता  
 उंमनिगमूति ॥ ३० ॥ यइमगु  
 विधमिवथरिलुमेभउपम  
 भा ॥ उइपंभाडिकेपेऊभाइ  
 वडिप्रभासलभा ॥ ३१ ॥ विध  
 यमियभयेगाइउमगुभउ  
 पमभा ॥ थरिलुमेविधमिव  
 उइपंगलसंभउभा ॥ ३३ ॥  
 यमगुलउवउमभापंभेदर

४.  
 गी.  
 पृष्ठ.  
 ३०७



भाङ्गरः विद्वलभृशभाङ्गिः  
कुमभभृशहउभा ३७ ३३  
मक्षिपविष्टं वामिविदेव  
वापराः सङ्कुपुदडिलैदुङ्गय।  
महिः भृदिभिजुलैः ॥ २० ॥ वृ  
क्रमद्वियविमं सुदुलं म  
परउप कदलिपुविठऊ  
विभुठवपुदवैजुलैः ॥ २० ॥  
मभेदभभुपः मभेदभुपः  
लवभेवम सुवि सुभभुपि

कं वक्रक मधुवणभा ॥ २३  
 मोदंते लोप रिद्धं पदुमाध  
 पलायमा ॥ मरभीषुगव  
 सुदं क मधुवणभा ॥ २३  
 रुधिगोरुवालि लुं वैमृक म  
 मधुवणभा ॥ परिमदा म्कं  
 क ममुद्रा पिमधुवणभा  
 २२ ॥ सुमृक म्ठठिउः मं  
 मिदिं लठउरः ॥ मुक म्नि  
 उउमिदिं यवा विमृ डिउकु

ठ.  
 जी.  
 मधु.  
 ००



५॥ २५॥ यतः प्रवृत्तिः कुतः  
रां येन भवमिदं उत भा भव  
म॥ ७॥ उत म॥ हृन्मिदं विदुः  
भारवः ॥ २७॥ मूयादुपदेवि  
गुणः परमं दुःखं विदुः ॥ २८॥  
उवरीयतं कर्म कुचत्रा प्रोति  
किल्बिषभा ॥ २९॥ भजलं क  
र्म केतुय भवेधमपिरहण  
त ॥ भवगभुजिदेधे ॥ ३०॥  
भगवति विवाचुः ॥ ३१॥ ५५

ऊचद्विभ्रवश्लिङ्गविगः  
 भद्रः वैष्णवमिहिंपरभंभ  
 दृभेनगिगस्तुति॥२७॥ मिहिं  
 प्राधेयषावृद्धमधेतिनिवे  
 एभे॥ भभाभेनदुकेतुयनिध  
 स्तुतयपरा॥५॥ वद्वि  
 सुदययुक्तेपदद्वनियथ  
 स॥ मद्यमीविधयंभृङ्ग  
 गद्वेधेद्वमभुस॥५०॥ विवि  
 ऊभेवीलधमीणिउवाक

ठ.  
 गी.  
 सुप्र.  
 ०००



यभायमः ॥ शृययोगधर्मेति  
वैगुंमभयामिउः ५३  
मुदङ्कुरंवलंमदं कभंरूपं  
परिगुदभा ॥ विभृतिमः  
मात्रेवृक्षुयायकलउ ५३  
वृक्षुउः ५३ सत्राद्वरमेयति  
नकङ्कुरि ॥ सभः मत्रेवृक्षुउः  
प्रमङ्कुरिंलठउयराभा ५३  
ठङ्कुराभाभठिराडियावावृ  
झामिउउउः ॥ उउंमंउउंउ

इविमउअरत्रुभा॥५५॥  
 भवकदंष्ट्रपिसरुज्जवा  
 लिभदुपासुयः॥भदुसा  
 मरवाप्रेडिमासुउंथमभट्ट  
 यभा॥५६॥सोअभचक  
 दलिभयिमत्रुभदुरः॥  
 बुद्धियोगभुपसिद्धमस्त्रिडः  
 मउंठव॥५७॥भस्त्रिडःम  
 दनालिभदुसादडविष्ट  
 मि॥सुवमेदुभदुगत्रमे

रु.  
 जी.  
 यभा



पुमिविरहमि ५३ यद  
दक्षमामिहयेमृडिमिह  
म॥ मिष्टैववृवभायमुपूत  
डिभुंनियेहृति ५७ भुव  
ल्लरकेतुयनिरहः सुनकम  
॥१॥ कुरुंरुमियमैदहृति  
पृभुवमैपिउर॥१०॥ रेषः  
मचक्रुडंरुहमेहृतिभुवि  
इभयम्वक्रुडनियत्रुक्रु  
विभायया॥१०॥ उमवमरां

गङ्गाभवत्तवैरुत्त ३३ उद्गुभा  
 मद्गं मातिं भूतं पूष्यसिमा  
 सुत्तभा ७३ उतिउत्तु रभाष्टा  
 उं गृह्णुत्तु उं भया विभष्टे  
 उद्गमेयल यत्तु भिउत्तु  
 रु ७३ भवत्तु उं भूयः  
 मद्गं भिपत्तु वसः ७३ भिभ  
 मद्गं भिउत्तु वेत्तु भिउत्तु  
 भा ७३ भवत्तु वभूत्तु  
 भद्गं एत्तु भभूत्तु भभवे

रु.  
 गी.  
 पृष्ठा.  
 ००३



पृथिवीभूतेश्वरपुत्रियेभि  
म ७५ भवत्तु चरित्तुभ  
मेकंमरां वृत्ता ७६ म  
वपपेहेभैदयिष्टाभिभासु  
मः ७७ ७८ उं उं उं उं उं उं  
उं उं उं उं उं उं उं उं उं  
वेव सुं रमभां येहे सुयति ७  
१ ७९ यं यं यं यं यं यं यं  
पुठिणपुठि ८० उं उं उं उं उं  
रुद्रभाभेवैष्टुमंमयः ८१

नमो भद्रं च नृपुत्रक विद्महे प्रिया।  
 दृश्यः ठवि नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 प्रियं नृपुत्रक वि ॥ १७ ॥ नृपुत्रक  
 यदंभं नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 यदंभं नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 भद्रिः ॥ १८ ॥ नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः ॥ नृपुत्रक  
 नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः ॥ १९ ॥ नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः  
 नृपुत्रकं नमो भद्रं च नृपुत्रकः ॥ नृपुत्रक

क.  
 गी.  
 नृपुत्रक.  
 ००८



विमलरसमैदः पूमभुम्भ  
पराह्वय ॥ १३ ॥ पुनरावृत्त  
रश्मिभेदः भद्रिस्तुष्टु इष्टु  
ममयाष्टु ॥ भिन्नेभि गत  
भद्रेदः करिष्टुवमनेष्टु ॥  
१३ ॥ भाह्वयउवा ॥ ७५  
दंवाभुम्भवभुपाजभुमभ  
दंवाभुम्भवभुपाजभुमभ  
धमदुष्टुभेदद्वामभा ॥ १४  
दंवाभुम्भवभुपाजभुमभ

भजं परमा ॥ येन येगी सुर  
 दक्षु मं दक्षु मयः सुवभा ॥  
 १५ गण मं भु दं भु द  
 संवा द भिम भदु उभा ॥ किम  
 वाल न येः पृष्टं हृष्टा भिम  
 भदु दक्षुः ॥ १७ ॥ उच्च सं भु द  
 सं भु द द्वा प म द्वा दु उं जः ॥  
 वि भु ये मं भद नृण रुष्टा  
 भिम पतः पतः ॥ १८ ॥ य इ ये  
 गी सुरः दक्षु य इ ये पतः

क.  
 गी.  
 पृष्ट.  
 ००५



नगः ॥ उइमीचिएयेकुडिउ  
वारीडिउडिउम ॥ १३ ॥

उडिमीभदरुगउमउभाज  
भुंभंदिउयंवेयाभिकुं

ठीपपचलि ॥ मीठगवर

मीउअपविधदुवुकविह

यंयोगमाभुमीठधुलुन

भंवापभैदभंरुभयेगी

भाभुदमेष्टायः ॥ ०३ ॥

सुठभभमचणगउम ॥

